होशंगाबाद विज्ञान

अंक 19

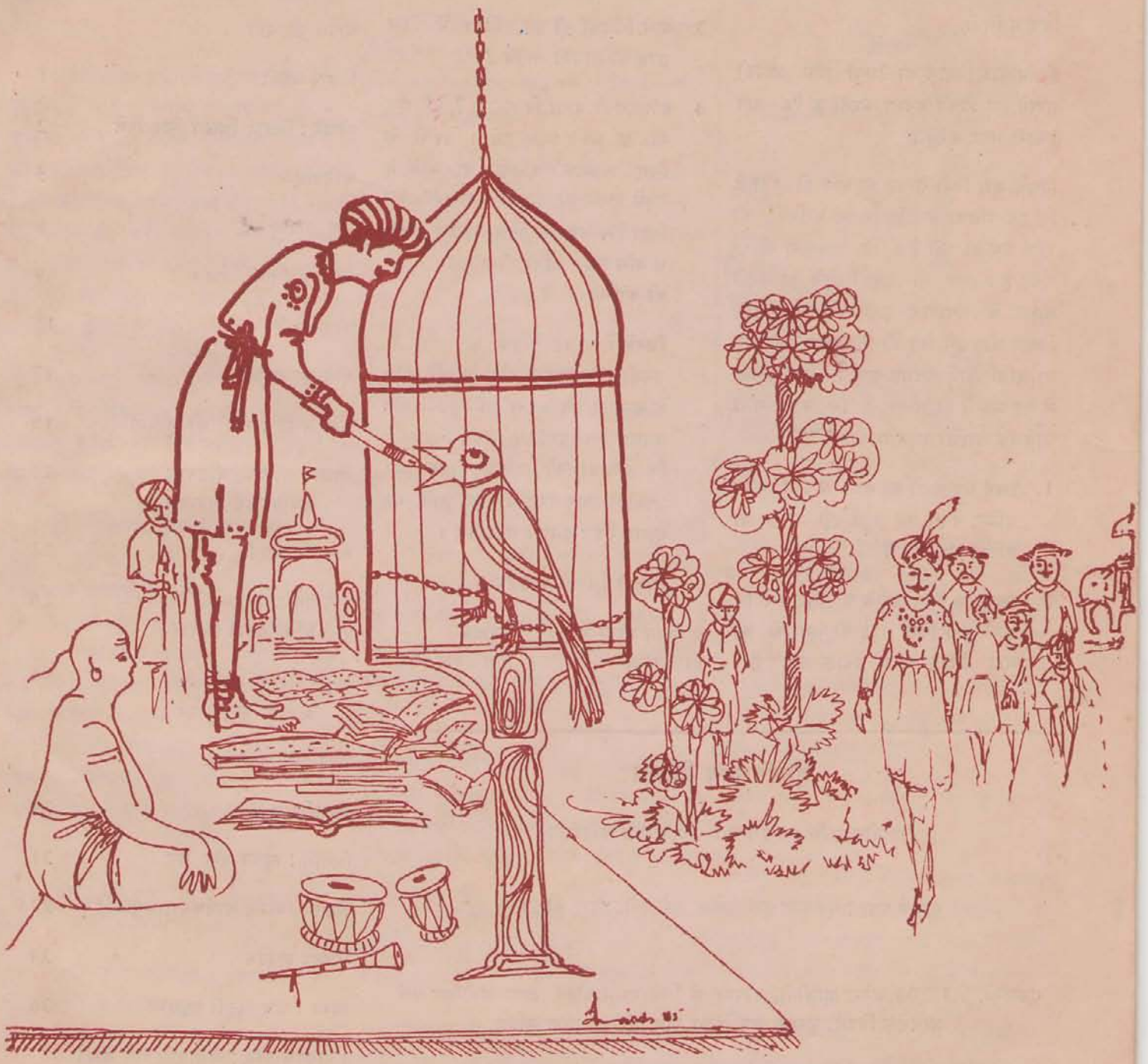

तोते की कहानी
न्यूटन और सेव

झोले में पुस्तकालय
सांपों की दुनिया

मिस्टर डाक्टर
अंधविश्वास निवारण

आपस की बातें

चिट्ठी आपके लिए

प्रिय साथियो,

होशंगाबाद विज्ञान का 20वां अंक आपको सौंपते हुए आपसे अपेक्षा करता हूं कि आप हमारी मदद करेंगे।

पिछले कुछ दिनों से यह अहसास हो रहा है कि इस पत्रिका के प्रति शिक्षक साथियों की रुचि कम हो रही है। इस अहसास की दो वजह हैं। एक तो इसको लेने वालों की संख्या में लगातार कमी आना। दूसरा, जितने लोग इसे लेते भी हैं, उनसे फीडबैक या प्रतिक्रियायें लगभग शून्य हैं। इन हालतों में यह जरूरी हो जाता है कि यह समझा जाय कि आखिर मामला क्या है ?

1. इसमें छपे लेखों का स्तर आपको बहुत कठिन, सरल, या बहुत ही सरल, या घटिया लगता है ?
2. उदाहरण देकर बताने का कष्ट करें कि इसमें छपी किस तरह की सामग्री को आप बेकार और उबाऊ मानते हैं ? और किस तरह की सामग्री को काम की मानते हैं ?
3. आप शिक्षकों की इस पत्रिका में किस तरह की सामग्री चाहेंगे ?
4. क्या इसकी भाषा क्लिष्ट है ? हाँ, एक बात का जरूर ध्यान रखें। बच्चों के लिए 'चकमक' पत्रिका आ जाने से इसमें बच्चों की सामग्री देना बंद कर दिया है। अब इसे शिक्षकों और शिक्षा में रुचि रखने वालों की पत्रिका बनाने की कोशिश की है।

जिनके लिए यह पत्रिका छप रही है, उनकी राय जानना और उनकी रुचि के अनुसार इसे करना हम बहुत जरूरी समझते हैं। इसलिए आपसे निवेदन है कि पत्रिका को अधिक रोचक और उपयोगी किस तरह बनाया जाय, यह सुझाव देकर हमारी मदद करें।

आपकी चिट्ठी के इंतजार में

एकलव्य हरदा केन्द्र — संपादक
होशंगाबाद — होशंगाबाद विज्ञान

होशंगाबाद विज्ञान

सहयोग राशि : एक रुपया (डाक खर्च अतिरिक्त)

सम्पर्क पता : एकलव्य हरदा केन्द्र, कॉलोनी, हरदा (म. प्र.)

एकलव्य, ई 1/208 अरेरा कालोनी, भोपाल के लिए श्याम बोहरे द्वारा प्रकाशित एवं अभिषेक प्रिंटर्स, यूनानी शफाखाना रोड, भोपाल द्वारा मुद्रित

इस अंक में

आपस की बात

विज्ञान पहेली	1
गोष्ठी : विज्ञान शिक्षण सिफारिशें	2
कविताएं	5
लघु कथाएं	6
भाषा : कहानी लेखन	9
फाउन्टेन पेन	16
तोते की कहानी	17
जीव जगत : सांपों की दुनिया	19
विज्ञान लोक व्यापीकरण: अंधविश्वास निवारण	21
गन्ने की कहानी	23
इतिहास : मजदूर की निगाह में इतिहास की किताब	25
अनौपचारिक शिक्षा : झोले में पुस्तकालय	26
जरा सिर खुजलाइये	27
सवालीराम	29
विज्ञान : न्यूटन और सेव	31
विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम : अनुवर्तन	33
मिस्टर डाक्टर	34
व्यंग्य : अथ छुट्टी महात्म्य	36

[आवरण पृष्ठ : अजीजुर्रहमान शेख]

विज्ञान पहेली

प्रसिद्ध उपन्यासकार एच० जी० वेल्स ने अपने एक उपन्यास में एक बहुत ही विचित्र घटना का वर्णन किया है। घटना कुछ इस प्रकार है।

कथाकार का एक दोस्त है जो बहुत ही मोटा है। वह अपनी मोटाई कम करना चाहता है। वह अपने कथाकार मित्र से मदद करने के लिए कहता है। कथाकार के पास एक आश्चर्यजनक दवा है जिसको पीने पर शरीर का भार एकदम कम हो जाता है। मोटा दोस्त यह दवा मांगकर ले जाता है। कुछ दिनों बाद, कथाकार इस दोस्त के घर जाता है.....

बहुत समय तक किसी ने घर का दरवाजा नहीं खोला। फिर चाबी घुमाने की आवाज सुनाई दी और अन्दर से मोटू की आवाज आई, "अन्दर आ जाओ।"

मैंने दरवाजा खोला। वहां कोई नहीं था। कमरा अस्त-व्यस्त था। किताबों के बीच गंदी थालियां पड़ी थीं। कुर्सियां उल्टी हुई थीं। पर मोटू कहीं नहीं दिख रहा था। "भई मैं यहां हूँ! दरवाजा बंद करो!" मैंने आवाज सुनकर कमरे में नजर घुमाई। मोटू दरवाजे के पास छत और दीवार के कोने में लटका हुआ था। लग रहा था जैसे किसी ने उसको वहां चिपका दिया हो। उसका चेहरा गुस्से और भय से लाल हो रहा था।

"मोटू" मैंने कहा, "यदि तुम फिसले तो नीचे गिरकर गरदन तोड़ लोगे।"

"अरे, यह तो बहुत अच्छा होगा...." मोटू ने थोड़े गुस्से में जवाब दिया।

मैंने थोड़े आश्चर्य से उसे देखा और कहा, "इस उम्र में तुम्हें ऐसी कसरतें नहीं करना चाहिए। अच्छा, यह बताओ, तुम किस चीज के सहारे लटके हुए हो?"

मोटू कुछ जवाब दे, तब तक मेरी समझ में भी आ चुका था। वह लटक नहीं रहा था। वह ऊपर तैर रहा था। जैसे गैस से भरा गुब्बारा हवा में तैरता है।

मोटू नीचे आने की कोशिश कर रहा था। वह हाथ-पैर से छत को ढकेल रहा था। कभी दीवार के सहारे रेंगकर नीचे आने की कोशिश कर रहा था। पर इसमें उसे सफलता नहीं मिल रही थी। वह फिर से उड़कर छत से टकरा जाता था। अंत में वह दीवार से लगी चिमनी के सहारे नीचे उतरने की कोशिश करने लगा।

हांफते हुए उसने कहा, 'तुम्हारी दवा कुछ ज्यादा ही असरदार निकली। भार तो गायब ही हो गया है।"

अब तक मैं सारी स्थिति समझ चुका था। "मोटू" मैंने कहा, "तुम्हीं ने मोटाई कम करने की दवा मांगी थी। तुम हमेशा कहते रहते थे कि भार कम करना चाहते हो। खैर कोई बात नहीं। मैं तुम्हारी मदद करूंगा।"

उसका हाथ पकड़कर मैंने उसको नीचे की ओर खींचा। पर वह कहीं भी स्थिर नहीं रह पाता था। लग रहा था जैसे वह हवा में नाच रहा है। दृश्य बहुत ही मजेदार था।

"यह मेज काफी मजबूत और भारी है। मुझे किसी तरह इसके नीचे घुसा दो।" मोटू ने कहा। नाचते-नाचते वह थक गया था।

मैंने यही किया। मोटू को मेज के नीचे खींच लिया। पर वह वहां भी हिल-डुल रहा था, जैसे बंधा हुआ गुब्बारा हिलता है। वह

एक क्षण के लिए भी स्थिर नहीं रह पा रहा था।

"एक बात जरुर याद रखना" 'मैंने कहा, "कभी गलती से भी घर के बाहर मत निकलना। वरना तुम उड़कर आकाश में गायब हो जाओगे।"

मैंने उसको स्थिति के अनुकूल रहने की सलाह दी। जैसे, उसको छत पर हाथों के सहारे चलना सीखना चाहिए।

"मगर मैं सोऊंगा कैसे?" मोटू ने चिंता से कहा।

मैंने कुछ सोचा और फिर कमरे में एक सीढ़ी रख दी। मोटू का खाना किताब की आलमारी पर लगाया जाने लगा। मैंने उसको नीचे उतारने का हल भी सोच लिया। आलमारी के ऊपर 'विश्वकोष' रख दिया। जब मोटू नीचे आना चाहता, तब वह हाथ में विश्वकोष के दो खंड उठाकर नीचे उतरता।

(पृष्ठ 8 को)

गोष्ठी

विज्ञान शिक्षण

नई शिक्षा नीति के अंतर्गत विज्ञान शिक्षण पर 15-17 नवम्बर 1985 को भोपाल में एक बैठक बुलाई गई। यह बैठक उन बैठकों में से एक है जो भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने अलग-अलग संस्थाओं से करवाने का आग्रह किया था। जैसे केरल शास्त्र साहित्य परिषद से विज्ञान लोक व्यापीकरण पर और आई. आई. टी. दिल्ली से प्रौद्योगिकी शिक्षण पर, एकलव्य को राष्ट्र के विज्ञान शिक्षण के लिए सिफारिशें करने हेतु यह बैठक करवाने का आग्रह किया था। हम यहां बैठक से उभरी सिफारिशों का सारांश प्रस्तुत कर रहे हैं।

(1) विज्ञान शिक्षण का प्रमुख जोर विज्ञान की विधि सिखाने पर होना चाहिये। विज्ञान शिक्षण द्वारा बच्चों में समस्या का हल ढूंढने का कौशल व विवेचनात्मक दृष्टिकोण का विकास किया जाना चाहिए।

(2) विज्ञान शिक्षण की विधि आसपास के पर्यावरण एवं क्रिया पर आधारित होना चाहिए। जिसमें मानसिक क्रिया भी शामिल है।

(3) प्राथमिक शिक्षण के केन्द्र बिन्दु ऐसे प्रयोग, शैक्षणिक खेल व पर्यावरण के अवलोकन हों जिन पर कोई खर्चा न हो। प्राथमिक शालाओं के पाठ्यक्रम में इस बात पर बल दिया जाए कि विज्ञान का उपयोग मूलतः भाषा व गणित के कौशल हासिल करने के लिए ही किया जाए, न कि वैज्ञानिक जानकारी या सिद्धांतों की समझ बढ़ाने के लिए। इस रूप में प्राथमिक शालाओं में विज्ञान अपने आप में एक विषय नहीं होना चाहिए, इस बात पर काफी जोर दिया जाए।

(4) बच्चों के स्वयं प्रयोग करने (शिक्षक द्वारा केवल प्रयोग का प्रदर्शन नहीं) की शुरूआत माध्यमिक स्तर से हो जानी चाहिए। इसके लिए जरूरी है कि हर माध्यमिक शाला में विज्ञान के प्रयोग की सामग्री दी जानी चाहिए। और हर साल टूट-फूट व खर्च हो जाने वाली सामग्री को पुनः उपलब्ध कराया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर तक, जहां तक हो सके केवल वे अवधारणाएं हों जो कि छात्र को स्वयं अनुभूति कराकर (प्रयोग, परिभ्रमण या पूर्व अनुभव पर आधारित) उभारी जा सकती हैं।

(5) उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विज्ञान की मूल अवधारणाओं को विज्ञान शिक्षण का केन्द्र बिन्दु बनाना होगा न कि वैज्ञानिक जानकारी रटाने को। विज्ञान में प्रयोग और सिद्धांत बहुत गहरे रूप से जुड़े हुए हैं- अधिकांशतः सिद्धांत प्रयोगों से उभरे हैं, या परिकल्पनाएं प्रयोगों से सिद्ध हुई हैं। यह पता है कि उच्चतर माध्यमिक स्तर तक बहुत सारे ऐसे सिद्धांत है जिन्हें उदाहरण आदि द्वारा समझाया जा सकता है। परन्तु यदि प्रयोग करवा कर ही उन सिद्धांतों को उभारना हो तो वे प्रयोग स्कूली स्तर पर असंभव ही हैं। (जैसे परमाणु आदि के लिए।) लेकिन जितने प्रयोग करवाए जाते हैं उन्हें इस प्रकार कराया जाना चाहिए कि वे पहले से उपलब्ध जानकारी अथवा धारणाओं को केवल प्रमाणित करने के लिए न हों। वरन् उन से संबंधित सिद्धांत भी उभर सकें।

(6) भारत में केवल 23% छात्र-छात्राएं माध्यमिक स्तर से आगे शिक्षा पाते हैं, माध्यमिक शाला के बाद पढ़ाई छोड़ने वालों का काफी ऊंचा प्रतिशत है। इसलिए कक्षा 8वीं तक सामान्य बौद्धिक कुशलताओं पर अधिक जोर होना चाहिए न कि उच्चतर माध्यमिक पाठ्यक्रम से ताल-मेल बैठाने पर।

(7) हर स्तर के विज्ञान पाठ्यक्रम में विज्ञान की मूल अवधारणाओं की समझ के विकास की झलक होना चाहिए न कि केवल वैज्ञानिक जानकारी की।

(8) राष्ट्रीय पाठ्यक्रम पर्यावरण आधारित शिक्षा के सिद्धांत के विरुद्ध है। राष्ट्रीय स्तर पर केवल हर स्तर की न्यूनतम शैक्षणिक अपेक्षाएं निर्धारित की जानी चाहिए। इन अपेक्षाओं की पूर्ति किस विधि से हो, इसे लचीला छोड़ देना चाहिए ताकि पर्यावरण आधारित पठन-पाठन के लिए संभावनाएं हों।

(9) यह मानते हुए कि पाठ्यक्रम की विषय वस्तु व पाठ्यविधि को अलग-अलग नहीं किया जा सकता, पाठ्यक्रम का विकास वास्तविक हालातों में सतत् परीक्षण के साथ होना चाहिए। शालाओं के शिक्षकों को इस प्रक्रिया में सक्रिय होना चाहिए। विशेषज्ञों को लगातार पठन-पाठन की वास्तविक परिस्थितियों (आम गांव के स्कूलों से न कि मात्र शहर के चन्द स्कूलों से) से हमेशा संपर्क रखना चाहिए।

(10) यह मानना होगा कि शिक्षा में गुणात्मक बदलाव तब तक संभव नहीं होगा, जब तक कि जानकार और पर्याप्त प्रशिक्षण

प्राप्त शिक्षक को अपने काम से पर्याप्त संतोष नहीं मिलेगा। यदि ऐसे शिक्षकों का निर्माण करना हो तो जरूरी होगा कि उपयुक्त स्त्रोत सामग्री (पुस्तकें व उपकरण व स्त्रोत व्यक्ति, विषय विशेषज्ञ आदि) हमेशा शिक्षक के लिए उपलब्ध कराए जाएं। इसके लिए एक अनुवर्तन और पुर्नानिवेशन (फीडबैक) की प्रक्रिया स्थापित करनी होगी। दूसरी चीज यह है कि शिक्षकों का दर्जा उठाना होगा और दर्जा ऊंचा करने का एक तरीका है कि शिक्षकों की तनख्वाह बढ़ाकर शिक्षक का पेशा लुभावना बनाया जाए। यह ध्यान देने लायक है कि जापान में स्कूली शिक्षकों की तनख्वाह आम प्रशासनिक अधिकारियों से 3% अधिक तय की गई है और इसका नतीजा जापान की शिक्षा के लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ है।

(11) संपूर्ण राष्ट्र में गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण लागू करने के लिए अधिक धन की जरूरत नहीं है। स्पष्ट है कि अधिक खर्चे का तर्क गतिविधि आधारित विज्ञान शिक्षण कार्यान्वित करने के विरुद्ध नहीं दिया जा सकता।

हाँ न्यूनतम आवश्यक सुविधाएं (जैसे भवन, टाट पट्टी, श्यामपट, पीने का पानी आदि) व पर्याप्त शिक्षक मुहैया कराने के लिए अलबत्ता काफी खर्चे की आवश्यकता होगी। यह खर्चा यदि वर्तमान खर्चे का दुगुना भी है तो भी यह खर्च तो करना ही होगा इसे किसी भी हालत में टाला नहीं जाता। राष्ट्र की विकास नीति को इस प्रकार से ढालना होगा कि यह पूंजी शिक्षा के लिए प्राप्त की जा सके और यह आवश्यकताएं अधूरी न छूटे।

[12] शिक्षा के लोक व्यापीकरण का उद्देश्य किसी भी हालत में छोड़ा नहीं जा सकता। यदि भारत 100% साक्षरता और कम ऊंची तकनीक के साथ इक्कीसवीं सदी में प्रवेश करता है तो यह एक शानदार और गौरवपूर्ण प्रवेश होगा। लेकिन यदि इसका उल्टा हुआ [यानि खूब ऊंची प्रोद्योगिकी परन्तु बहुत कम शिक्षा] तो यह महाअनर्थ होगा।

[13] बहुत अधिक खर्चे पर हर जिले में एक मॉडल स्कूल स्थापित करने का कोई औचित्य नहीं है। उनकी उपयोगिता, प्रवेश के मापदण्ड व दूसरे बच्चों पर असर काफी संदिग्ध है (उन पर काफी सवाल हैं); वास्तविकता में वे शिक्षा की मौजूदा असमानता को और बढ़ायेंगे ही। मॉडल स्कूल बनाने के विचार को शीघ्रातिशीघ्र त्याग देना चाहिए और इसके बजाय सभी स्कूलों की हालत सुधारने की कोशिश करनी चाहिए।

[14] स्कूल कालेज व विश्वविद्यालय स्तर की परीक्षा प्रणाली में इकट्ठे ही मूलभूत परिवर्तन लाने की जरूरत है। कोई भी नवाचार अन्त में निरर्थक हो जाता है यदि साथ साथ परीक्षा प्रणाली नहीं बदलती। परीक्षा का मतलब होना चाहिये सुपरिभाषित और सार्थक उपलब्धि के स्तर की परख, न कि अल्पकालिक याददाश्त की।

[15] शिक्षा प्रशासन में ऐसे मूल बदलाव की जरूरत है जिससे कि वह नवाचार में सहायक के रूप में हो न कि अवरोध के रूप में। ऐसे प्रशासनिक ढांचे खड़े करने के म. प्र. सरकार व होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण समूह के प्रयासों को एक नमूने के रूप में देखा जाना चाहिये।

★

उसकी नन्हीं हथेलियों में

बच्चा !
जो गा सकता है,
गाता नहीं है।
बच्चा !
सब कुछ पा सकता है
पाता नहीं है।
बच्चा !
भूत या
वर्तमान बनते हुए
भविष्य बनाएगा
वह कहीं भी जाएगा।
कुछ भी पा सकता है
लेकिन
पाता नहीं है।
इसका जवाबदार कौन ?
मां, बाप, पालक, तुम !
या
मैं ?

ये गीत उसके हैं
उसे गुनगुनाने दो।
उसका है सूरज,
और
उसका समंदर !
उसकी नन्ही हथेलियों में
यह सब
समाने दो।
वरना
कल ये बच्चा
हाथ में चाबुक लेकर
तुमसे पूछेगा
अपने हलाल हुए बचपन का
गिन-गिन कर
सारा हिसाब !

प्रमोद उपाध्याय
भौंरासा, देवास

आखिर कितना पैसा चाहिए

देश की नीति निर्धारण करने वाले गलियारों में अक्सर यह धारणा पाई जाती है कि ऐसे विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम जिसमें किट सामग्री और उसकी वार्षिक क्षतिपूर्ति, अनुवर्तन और फीडबैक प्रणाली व निरन्तर प्रशिक्षण कार्यक्रम की जरूरत हो, वह भारत सरीखे गरीब देश के लिए बहुत मंहगा है। हकीकत को समझने के लिए होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम से प्राप्त अनुभव के आधार पर अनुमान लगाएं और कुछ ठोस आंकड़ों के जरिये उपरोक्त धारणा को परखने की कोशिश करें।

सबसे पहले मिडिल स्कूलों की बात करते हैं, जहां के लिए होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम का अनुभव एकदम सटीक होगा। एक औसत स्कूल जहां प्रत्येक कक्षा में 40 बच्चे हों विज्ञानकिट पर पूंजीगत खर्च 1200/- रुपए होगा। मान लो एक औसत जिले में 200 मिडिल स्कूल हैं तो पूरे जिले में बुनियादी किट सामग्री के लिए 2.5 लाख रु.। इसके अलावा आवर्ती खर्च जिसमें किट की क्षतिपूर्ति, अनुवर्तनकर्त्ताओं का यात्रा भत्ता (टी. ए. डी. ए.) म. प्र. सरकार की दरों के अनुसार। मासिक गोष्ठियों, 100 शिक्षकों के वार्षिक प्रशिक्षण तथा संगम केन्द्र स्तर पर डाक व्यय आदि खर्च मिलाकर 1.5 लाख रु. होगा। यह जानकारी म. प्र. सरकार के शिक्षा विभाग के सहयोग से होशंगाबाद जिले के लिए बनाए गए प्रशासकीय मेन्युअल के अनुसार है।

प्रत्येक जिले में औसतन 1000 प्रायमरी स्कूल हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि स्थानीय पर्यावरण आधारित बिना खर्च के प्रयोगों पर जोर दिया जाएगा। विज्ञान, भाषा और गणित की गतिविधि आधारित (Activity based) पढ़ाई के लिए खेल, कुछ सामग्री और शिक्षकों का मेन्युअल छपवाने के लिए लगभग 1000/- रु. की मूल पूंजी की जरूरत होगी। एक जिले के 1000 स्कूलों के लिये 10 लाख रुपयों की जरूरत होगी। प्रत्येक स्कूल के लिये अधिक से अधिक आवर्ती खर्च 300/- रु. सालाना की दर से जिले भर के लिये 3 लाख रु. होगा।

उच्चतर माध्यमिक शालाएं :— प्रत्येक जिले में औसतन 40 उ. मा. शा. हैं। सामान्यतः सभी में प्रयोग शालाएं होती हैं। फिर भी प्रत्येक शाला पर 10000 रु. खर्च करके उन्हें प्रयोग आधारित विज्ञान शिक्षण के लायक बनाया जा सकता है। इस तरह कुल 4 लाख रु। 5000 रु. सालाना आवर्ती खर्च जो कि अभी स्कूलों को दिया ही जाता है, से किट की क्षतिपूर्ति, अनुवर्तन, फीडबैक और शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये पर्याप्त होंगे। इस तरह 2 लाख रु० सालाना और। इन सभी का योग होगा :

इस हिसाब से देश के 550 जिलों के लिये 90,75,00,000 रु. पूंजीगत और 35,75,00,000 रु. आवर्ती खर्च, इस तरह हम देखते हैं कि पूरे देश में मिडिल स्कूलों और उ मा. शाला में, गतिविधि, प्रयोगनिष्ठ और पर्यावरण आधारित विज्ञान शिक्षण पद्धति जिसमें निरन्तर अनुवर्तन, फीडबैक और शिक्षक प्रशिक्षण सरीखे महत्वपूर्ण शैक्षणिक कार्यक्रम शामिल हैं। साथ में प्रायमरी स्कूलों में गतिविधि आधारित भाषा, गणित और विज्ञान की पढ़ाई भी जुड़ी हो। इसके लिए 100 करोड़ पूंजीगत और 35 करोड़ आवर्ती खर्च की जरूरत है। ध्यान देने की बात है कि पूरे देश भर के स्कूलों में विज्ञान शिक्षण के सार्थक प्रयास के लिए तीन मिराज (युद्ध में काम आने वाले विमान) के बराबर पूंजीगत और एक मिराज की कीमत के बराबर आवर्ती खर्च की जरूरत है। आपको मालूम होगा कि म. प्र सरीखे गरीब प्रदेश के शिक्षा का वार्षिक बजट 200 करोड़ रु है। जिसकी 90% राशि स्कूलों के लिये अपर्याप्त और अल्पवेतन भोगी शिक्षकों के वेतन पर ही खर्च होता है।

(शेष पृष्ठ 8 पर)

क्र0	स्कूल	पूंजीगत खर्च	आवर्ती खर्च
1—	प्रायमरी (1000 प्रति जिला)	10,00,000	3,00,000
2—	मिडिल (200 प्रति जिला)	2,50,000	1,50,000
3—	उच्चतर माध्यमिक शाला (40 प्रति जिला)	4,00,000	2,00,000
	योग	16,50,000	6,50,000

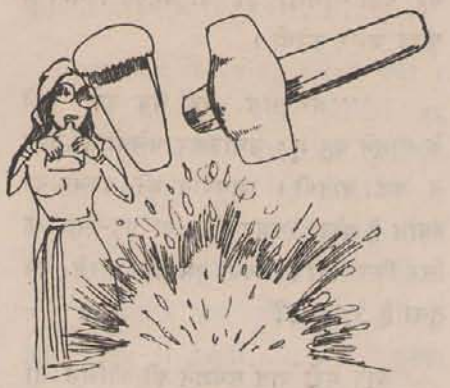

भाषा

पृथ्वी के अन्दर के सार में से
फूट कर निकलती हुई
एक भाषा है बीज के अंकुराने की ।

तिनके बटोर-बटोर कर
टहनियों के बीच
घोंसला बुने जाने की भी एक भाषा है ।

तुम्हारे पास और भी बहुत सी भाषाएं हैं,
अण्डे सेने की
आकाश में उड़ जाने की
खेत से चोंच भर लाने की ।

तुम्हारे पास
कोख में कविता को गरमाने की भाषा
भी है ।

तुम बीज की भाषा बोलीं
मैं उग आया
तुमने घोंसले की भाषा में कुछ कहा
और मैं वृक्ष हो गया ।
तुम अण्डे सेने की भाषा में गुनगुनाती रहीं
और मैं आकार ग्रहण करता रहा ।

तुम्हारे आकाश में उड़ते ही
मैं खेत हो गया ।
तुमने चोंच भरी होने का गीत गाया
और मैं नन्ही चोंच खोले
घोंसले में चिचियाने लगा ।
तुम्हें आश्चर्य हो रहा होगा कि मैं
तुम्हारी कोख में गरमाती
कविता की भाषा बोल रहा हूँ ।

शरद बिल्लोरे

○ □ ○

पत्थर

छेनी और हथौड़े के संघर्ष
सारे वातावरण में

डायनामाइट के धमाकों के बीच
बहुत भीतर तक टूट टूट कर
पत्थर
कितने ज्यादा ऊब गए है
हमेशा हमेशा दीवार होते रहने से
पता नहीं कब से पत्थर
दीवार होना नहीं चाहते ।

ठेकेदार की तरह पान खा कर
बिना बात गाली देना चाहते हैं ।
बड़े साहब की मेम की तरह
चश्मा लगाकर छागल से पानी पीना चाहते हैं।
पहाड़ पर बहुत ऊपर तक चढ़कर
साहब की जीप की सीध में
नीचे तक लुढ़क जाना चाहते हैं ।
कुल मिलाकर पत्थर
पहाड़ छोड़ देना चाहते हैं ।

कहां जाएंगे
पत्थर पहाड़ छोड़कर कहां जा सकते हैं
इतने सारे पत्थर नर्मदा में डूबकर
शंकर भगवान भी नहीं हो सकते
सिर्फ छींट का लंहगा पहने
पीठ पर पत्थर बांधे
पीढ़ी दर पीढ़ी
तम्बाकू का पीक थूकते हुए
पत्थर
पत्थर ही तो फूट सकते हैं
या फिर दीवार होते रहने से ऊब सकते हैं ।

हम जहां जा रहे हैं
वे पहाड़ तो बर्फ के हैं ।

शरद बिल्लोरे

['तय तो यही हुआ था' से साभार]

●●

यह योजना दस लाख लोगों को रोजगार की शिक्षा देगी और २०० के लिए काम मुहैया करायेगी.

लघु कथाएं

कील

सड़क के बीच एक कील पड़ी है !

तेजी के साथ एक युवक साईकल पर आया । उसकी निगाह कील पर पड़ी । झटपट हैंडल घुमाकर वह अपनी मुस्तैदी पर मुस्कराया कि उसने साईकल का टायर पंचर होने से बचा लिया है ।

घिसे हुए जूते में कोई चीज चुभी है । बूढ़े ने गर्दन झुकाकर नीचे की ओर देखा । एक कील है । मुंह बिचकाकर वह आगे निकल गया ।

फिर आगे पीछे दौड़ते हुए दो लड़के आये । आगे वाले लड़के ने उछलकर अपने पांव को छलनी होने से बचा लिया । दूसरे ने पूछा—उछले क्यों ? पहले वाले ने कील की ओर इशारा कर दिया । साथ ही जख्मी होने से बच जाने की खुशी में किलकारी भर दी ! दूसरा उसकी होशियारी पर खुश हो गया । कील अब भी सड़क पर पड़ी है !

पृथ्वीराज अरोड़ा

बचत

देश पर संकट आया और सुरक्षा के लिए धन की आवश्यकता पड़ी । इसके लिए सुझाव यह भी आया कि प्रशासन में कटौती हो । मंत्री ने फौरन ऐलान किया, "ठीक है, हम आज से थर्ड क्लास में सफर करेंगे जैसे हमारे पिता महात्मा गांधी किया करते थे ।"

मंत्री के इस निर्णय से जनता बहुत प्रसन्न हुई, मगर रेलवे अफसर बेचारे बेहद परेशान हुए । सोचने लगे, मंत्रीजी के लिए सारी सुविधाओं से युक्त थर्ड क्लास का कम्पार्टमेंट कहां से लाएं ?

यह एक विकट समस्या थी । बड़े-बड़े अफसरों के दिमाग चकरा गए । लेकिन तभी एक कारकून ने एक सुझाव पेश किया । फौरन उस सुझाव पर अमल किया गया । घंटे भर बाद ही मंत्रीजी यात्रा के लिए आए । उन्होंने अपना कम्पार्टमेंट देखा । कम्पार्टमेंट सारी सुविधाओं से युक्त था-चौड़ी बर्थ, गद्देदार, पंखे, सुसज्जित शौचगृह आदि । वह अत्यन्त प्रसन्न हुए । रेलवे अफसर से पूछा, "क्या यह कम्पार्टमेंट खास तौर से हमारे लिए तैयार किया गया है ?"

"जी हां", अफसर ने कहा ।

"इसमें खर्च कितना आया है ?"

"सिर्फ पच्चीस पैसे !"

"मतलब क्या ?"

"जी बात यह है", अफसर ने कहा, "इस कम्पार्टमेंट के सामने पहले एक लकीर थी फर्स्ट क्लास की, उसकी जगह सफेदे से दो लकीरें और खींच दी गई हैं । इस तरह फर्स्ट क्लास का कम्पार्टमेंट अब थर्ड क्लास का हो गया ।"

मंत्रीजी की आंखें सराहना भाव से चमक उठीं, बोले, "यह किसके दिमाग की सूझ है ?" "रेलवे अफसर ने उस कारकून को सामने कर दिया ।

"ठीक है ।" मंत्रीजी ने हुक्म दिया, "यह कारकून आज से हमारा निजी सहायक नियुक्त हुआ । हमें ऐसे ही आदमी की जरूरत है ।"

मनमोहन मदारिया

['आठवीं दशक की लघु कथाएं' से साभार]

घूंघट

बापू भड़क उठा । बोला, 'तेरा दिमाग खराब है क्या ? ऐसा कैसे हो सकता है ? बहू पढ़ी - लिखी हो या अनपढ़ । गांव में घूंघट जरूर करेगी ।

.....अरे सोच, यहां सब बड़े - बूढ़ों के सामने बहू मुंह उघाड़कर चलेगी तो नाक न कट जायेगी । खानदान की इज्जत का ख्याल है थोड़ा बहुत ?...या पढ़-लिख के सिर फिर गया है । क्यों हमें नंगा करने पर तुला है रे.....?'

'बापू मेरी बात समझने की कोशिश तो करो ।' मेरे स्वर में झुंझलाहट थी, यह नया जमाना है । अब महिलाएं देश पर शासन करने लगी हैं । दरोगा बन रही हैं, मोटर-कार चला रही हैं । समय के साथ-साथ सब कुछ बदलता जा रहा है ।'

'लाला, तू अहमक है । मेरी बात मान, उस शहर की लकड़ी से शादी ही मत कर ।' बापू ने बात का रूख पलटा ।

'नहीं बापू, मैं शादी उसी लड़की से करूंगा । मेरा अंतिम फैसला सुन लो, तुम्हारी होने वाली बहू घूंघट कतई नहीं करेगी । चाहे कुछ भी हो जाये ।'

मेरी शादी के बाद बापू ने घर को दो हिस्सों में बांट दिया । एक मेरा घर, एक बापू का । मेरा घर बेपर्दा था ।

कालीचरण प्रेमी

नया जमाना

वह इन्जीनियर बनकर गांव लौटा । देखा, उसका बापू अभी तक कलुआ-घलुआ के साथ बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा है । बतिया रहा है, 'भैय्या ! उस भूरे सिर वाली भैंस का क्या हुआ ?...अजी होता-हवाता क्या, साली दूध से लात गई.... और कुल दो महीने की ब्याभन है.....बड़ी लम्बाई

चुगाई है ...पता नही ग्याभन रहवेगी भी या ना.....पीछे चार महीने की फिर गई.....सोचा है छज्जू को हिस्सा पर दे दूं .....वैसे भारी पड़ेगी.....'

उसने एक दो-दिन यह रवैया देखा। उसे बापू पर बहुत गुस्सा आया। वह समझाते हुए बोला, 'बापू अब तुम्हें कुछ सोचना चाहिए, तुम एक इन्जीनियर के बाप हो.....मालूम है मैं कितने ऊंचे ओहदे पर हूं ?.....कलुआ-घलुआ जैसे सैकड़ों लोग मेरे पैरों में नाक रगड़ते हैं.....किसी दिन दफ्तर में देखना.....ठीक है हुक्का ही पीना है तो अपने घर बैठकर पियो। तुम्हें किसी के घर जाने की जरूरत नहीं। जिसे तुमसे काम होगा, वह खुद मिलने हमारे घर आयेगा...अपने स्टैण्डर्ड का ध्यान रखो...।'

बापू अवाक बेटे की ओर देखता रह गया। वह समझ नहीं पाया कि उसका बेटा उसके 'आम आदमी' के अधिकारों का हनन क्यों कर रहा है। यह कैसा पिंजरा लाया है शहर से। अरे उस कलुआ ने तेरी पढ़ाई के लिए बेझिझक कर्ज दिया था। पढ़ा-लिखा सब अकारथ कर दिया तूने। बापू बिन पानी मछली की तरह भीतर ही भीतर तड़पने लगा था।

कालीचरण प्रेमी

शेखचिल्ली का सपना

शेख चिल्ली ने ग्रामीण रोजगार योजना के तहत मुर्गी पालन के लिये दरख्वास्त डाल दी थी। वह मन ही मन पुलकित हो रहा था-मुर्गी पालन के लिये डेढ़ हजार रुपये मिलेंगे जिनसे मैं ढेर सारी मुर्गियां खरीदूंगा। उन मुर्गियों के ढेर सारे अण्डे चूजे होंगे उन्हें बेचकर मैं अनेक बकरियां खरीदूंगा ! उनके ढेर सारे बच्चे होंगे जिन्हें बेचकर अच्छी नस्ल की गायें खरीदूंगा ! उनके दूध और बछड़े को बेचकर भैंस खरीदूंगा, भैंस का ढेर सारा दूध होगा जिसमें ढेर सारा पानी मिलाकर बेचूंगा जिससे मेरे पास ढेर सारे पैसे हो जायेंगे, उन पैसों से शहर के बीच एक दो मंजिला मकान खड़ा करूंगा तब नगर का करोड़पति सेठ मेरे साथ अपनी कन्या का विवाह कराने के लिये मेरे पैरों पर गिर पड़ेगा तब मैं बाहर से दहेज नहीं का बोर्ड टांग कर भीतर से लाखों रुपये ऐंठ लूंगा।'

शेख चिल्ली छः माह तक ऐसी कल्पना करते गांव से विकास खण्ड कार्यालय और विकास खण्ड कार्यालय से ग्रामीण बैंक के चक्कर लगाता रहा और वहां के बाबुओं को महाजन से रुपये उधार ले-ले कर चाय नाश्ता कराता रहा। अंत में जब उसका डेढ़ हजार का चेक भुना-विकास खण्ड के बाबू ने पांच सौ रुपये साहब के चाय पानी के लिये निकाल लिये, पांच सौ रुपये बैंक के बाबू ने इस खुशी में मिठाई खाने के लिये रख लिये, शेष पांच सौ रुपये महाजन ने उधारी के छीन लिये। शेख चिल्ली हाथ मलता रह गया। उसका सपना साकार न हो सका। गुस्से में उसने घर की खाली हण्डियों को लात मार-मार कर फोड़ डाला।

रवीन्द्र कंचन

['छोटे-छोटे सबूत' से साभार]

भोपाल गैस कांड

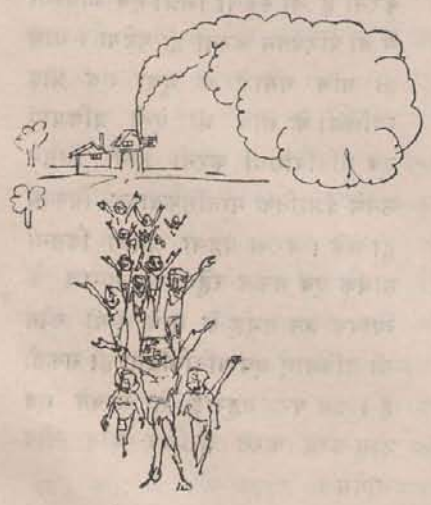

धुंआ जहर भरा
सारे शहर पर
किसने क्यों करा
जहां मिला स्थान
वो वहीं सो गया
जगहें तमाम बनी
श्मशान और कब्रस्थान
कैसे मरते हैं कीड़े-मकोड़े
हमने देखा हजारों
तड़फते लोगों ने प्राण छोड़े
यमदूत की योजनाएं
उसके लम्बे-लम्बे हाथ
चारों ओर फैल चुका
धुंआ बादल के साथ
शायद उस रात नहीं होता
इतना बड़ा हादसा
जागती खुली आंख
यदि भोपाल नही सोता।

रमेश सिसोदिया सोनकच्छ, देवास

आग उगलती दोपहरी में
मैंने देखा...पथ पर बरगद
सोचा...दो पल चैन मिलेगा
आशा से छाया ले....बैठा
किन्तु.....
मजिलों ऊपर बैठे
कौए, चील, कबूतर, तीतर
सुस्ताते ही.....
मेरे सिर पर बीट कर चले
गहरी छाया तले पले वे भले
किसी को दो पल का सुख
देख न पाये।

ऐ० के० सांवलिया सोनकच्छ, देवास

पहेली (पृष्ठ 1 से)

मैं उसके घर में दो दिन रहा। हथोड़े और बरमे की मदद से मैंने उसको सभी सुविधाएं उपलब्ध करवा दीं। एक तार बांध दिया, ताकि वह घंटी बजाकर किसी को बुला सके।

एक दिन मैं आग के पास बैठा था। मोटू अपने प्रिय कोने में लटका हुआ था। तभी मुझे एक विचार सूझा।

"ऐ मोटू, यदि तुम जमीन पर रहना चाहते हो तो सीसे की बनी वस्तु पहनो। यह एक भारी धातु है। सीसे की एक चादर लो और उसे कपड़ों के नीचे फिट कर लो। जूतों के तले में भी सीसा लगवा लो। और हाथ में सीसे का सूटकेस पकड़ो। बस सारी मुसीबते खत्म।"

मोटू परेशानी से रो पड़ा।

"तुम अब कहीं भी आ-जा सकते हो। शहर, राजधानी, विदेश.....जहां तुम्हारा मन करे। तुम कहीं भी यात्रा कर सकते हो। तुम्हारे लिए जहाज में डूबने का भी डर नहीं रहेगा। बस, सीसे की चादर और अन्य वस्तुएं छोड़ दो और डूबते जहाज से उठकर हवा में उड़ने लगो।"

पर क्या यह स्थिति संभव है? यह किस वैज्ञानिक सिद्धांत के खिलाफ है? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

पैसा (पृष्ठ 4 से)

ऊपर दिये गये अनुमानों में शाला भवनों के निर्माण और मरम्मत, पीने के पानी का इन्तजाम सरीखे ढांचे सम्बन्धी खर्च शामिल नहीं हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि विज्ञान शिक्षण में सार्थक सुधार के लिए उतने अधिक धन की जरूरत नहीं है जो हम आसानी से खर्च न कर सकें। अलबत्ता यदि हम देश भर के सभी स्कूलों के लिए कम्प्यूटर और वीडियो देना ही शैक्षिक सुधार का मापदण्ड न मान लें। ध्यान रहे कि बुनियादी प्रयोग शालाएं, सार्थक पाठ्यक्रम शिक्षकों के लिए निरन्तर जानकारी हासिल होती रहे ऐसा माहौल और अच्छा वेतन, ऊंची और मंहगी टेक्नालाजी की तुलना में निश्चित ही बेहतर विनियोग होगा और बहुत ही बहुत सस्ता भी।

★ ★

स्कूली शिक्षा की सार्थकता

मैं एक शाला में चकमक की जानकारी देने के लिए गया था। मेरे पास चकमक पत्रिका का सितम्बर अंक था। मैं कक्षा 8 वी के छात्रों को बता रहा था कि "चकमक" में कुछ स्थाई स्तंभ हैं जैसे मेरा पन्ना, प्रयोगशाला, मजेदार खेल, माथा पच्ची, सवालीराम इत्यादि। साथ ही साथ एक दो मुख्य कहानी या लेख होते हैं। इस अंक में "बरसात कहां गई" नामक लेख है। मैंने बच्चों से कहा इस वर्ष मालवा में पानी बहुत कम गिरा है, वह भी बहुत देरी से। आखिर पानी कैसे गिरता है एवं कौन गिराता है? कई बच्चों ने हाथ ऊपर किए "एक ने कहा, भगवान पानी गिराता है, दूसरा बोला, इन्द्र देवता पानी गिराता है, एक अन्य बच्चा बोला, पानी तो बादल गिराता है। फिर कई बच्चे एक साथ बोल रहे थे। कोई कहता पानी तो भगवान गिराता है, कई कह रहे थे पानी तो बादल गिराता है। फिर मैंने पूछा अच्छा बताओ बादल में पानी कहां से आता है। इस पर एक बच्चे ने कहा भाप से। फिर पूछा भाप कैसे बनती? इस तरह इसी क्रम में कई प्रश्न पूछे। प्रश्नोत्तर से स्पष्ट हो गया कि पानी किससे गिरता है, बादल कैसे बनते हैं एवं पानी कैसे बरसता है? फिर मैंने पूछा कि शुरू में कुछ बच्चे कह रहे थे कि पानी इन्द्र देवता बरसाता है, उनका क्या तर्क हैं? इस पर कक्षा में एक दम चुप्पी छा गई। फिर एक बच्चा बोला कि इस बार जब पानी नहीं बरस रहा था तब हमारे घर एवं मोहल्ले में बड़े-बूढ़े सभी यही बोलते थे कि लोग पाप ज्यादा करने लगे है, इससे इन्द्र देवता नाराज हैं, अत: बरसात नहीं हो रही है। किसी ने कहा कोई देवी नाराज है अत: पानी नहीं बरस रहा। इस पर कक्षा शिक्षक ने कहा तुम्हें भूगोल में पढ़ाया गया है कि बरसात बादलों से होती है फिर इसमें देवी-देवता की बात कहां से आ गई।

मैं सोचता रहा हमारी स्कूली शिक्षा का बच्चों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव क्यों नहीं पड़ता? इससे एक बात बहुत स्पष्ट हो जाती है कि यदि बच्चों में वैज्ञानिक मानसिकता का विकास करना है तो स्कूली शिक्षा एवं व्यवस्था में तो परिवर्तन करना ही पड़ेगा। साथ ही साथ समाज के युवा एवं प्रौढ़ व्यक्तियों के साथ भी ऐसी प्रक्रियाएं एवं गतिविधियां करनी होंगी जिससे उनमें वैज्ञानिक मानसिकता का विकास हो सके। वरना पहला प्रयास कितना सार्थक एवं सफल रहेगा। समाज के व्यापक जन समूह के साथ ऐसी कौन सी प्रक्रियाएं एवं गतिविधियां हो सकती हैं। इस पर गहराई से सोचने एवं ठोस काम करने आखिर कौन लोग आयेंगे।

रामनारायण स्याग

कहानी लेखन

कुछ दिनों पहले, होशंगाबाद में एक बाल मेला आयोजित किया गया था। इस मेले में तरह-तरह के कार्यक्रम थे जिसमें अधूरी कहानी पूरी करो व चित्र देखकर कहानी लिखो भी शामिल थे। इसमें दो अलग-अलग चित्रों के सेट क्रम से दीवार पर लगाये थे। उन्हें देखकर व आधार बनाकर बच्चों को कहानी लिखनी थी। इसके अलावा उन्हें तीन अधूरी कहानी दी गई थी, जिनके आधार पर बच्चों को कल्पना करके लिखना था कि कहानी आगे कैसे बढ़ेगी।

जब मेला आरम्भ हुआ तो अधिकांश छात्र इस कमरे में आते (कहानी पूरी करो एवं चित्र देखकर कहानी लिखो वाले कमरे में) और बाहर चले जाते। सभी छात्र पूरा मेला देख लेना चाहते थे। जब अधिकांश छात्र पूरा मेला और उसमें चल रही सभी गतिविधि देख चुके तो अपनी-अपनी रूचि के अनुसार खेलों में भाग लेना आरम्भ कर दिया। इसी तरह कुछ छात्र कहानी लेखन वाले कमरे में आये और किस तरह कहानी लिखना हैं समझकर अपने-अपने काम में लग गये। अन्य छात्र भी कहानी लेखन वाले छात्रों को देखकर आ गये और कहानी लेखन कार्य आगे बढ़ाया। कहानी लेखन के दौरान कुछ छात्रों को यह चिन्ता बार-बार बनी रहती थी कि जिस वाहन से हम आये हैं कहीं वह वापस तो नहीं जा रहा है, कुछ को यह चिन्ता खा रही थी कि कहीं उनका दोस्त तो नहीं भाग गया, इसलिये वे अधबीच में अपने स्थान से उठकर बाहर देख आते थे। कुछ छात्र इसे भी परीक्षा मानकर नकल करने लगे थे। वैसे बहुत से छात्रों ने अधूरी कहानी पूरी की और चित्र देखकर कहानी लिखी, कुछ छात्रों को शायद विषय समझ न आया था यह कार्य उनकी रूचि या क्षमता के अनुकूल नहीं था। अत: वे पर्चा पढ़कर कोरा ही वापस दे गये। बहुत से छात्र तो आने-जाने व भोजन की व्यवस्था के कारण जल्दबाजी कर रहे थे, और कहानी का कागज बिना कहानी पूरी किए वापस देकर और यह कह कर भाग जाते कि कहानी बाद में पूरी लिखेंगे।

छात्रों पर अत्यधिक जोर देना ठीक नहीं था। क्योंकि मेले में आये छात्रों में जो लिखने योग्य छात्र थे उनमें प्राय: सभी ने कहानी लिखीं खेल में भाग लिया। अधिकांश छात्रों ने जो कहानियां लिखीं उनमें व्याकरण व मात्रा की बहुत गलतियां हैं और बहुत नए दृष्टिकोण भी सामने नही आए। बहुतों ने चित्रों का वर्णन भर लिखा। कहानी पढ़ने पर लगा कि छात्रों को अक्षर जोडने से लेकर वाक्य निर्माण प्रक्रिया का भी बहुत अच्छा ज्ञान नहीं हैं। बहुत से छात्र कहानी किस तरह से लिखना हैं, नहीं समझ पाये, क्योंकि कुछ छात्रों ने तो अपने मन से दूसरी कहानी लिख दी। शायद इन छात्रों के लिए नयी कहानी लिखना या घटनाक्रम का विवरण लिखना संभव नहीं था और इस लिए चूंकि कहानी तो लिखना ही था इस-लिए पहले की सुनी सुनाई कहानी लिख दी। वैसे कहानी शब्द बच्चों के लिए विशेष महत्व रखता है और उनके लिए शायद यह मानना मुश्किल हो वे भी कहानी लिख सकते हैं।

चित्रों द्वारा कहानी लेखन में अधिकांश छात्रों ने पूरे चित्रों को देखे बिना, केवल एक ही चित्र पर कहानी लिखी है ऐसा भीड़ के कारण छात्रों को चित्र का लम्बे समय तक न दिख पाने के कारण हो सकता है।

चित्र देख कर कहानी लिखो में जब छात्रों की भीड़ बढ़ी तो बहुत से छात्र भीड़ में लगातार चित्र देखते तो नहीं रह सकते थे और न ही चित्र के पास लगातार बैठ सकते थे। अत: वे एक बार खड़े होकर आरम्भ से अंत तक चित्र देख लेते और दूसरे स्थान पर बैठकर चित्रों वाली कहानी पूरी करते। इससे ऐसा महसूस होता है कि छात्र चित्रों में कही गई बात को अपेक्षाकृत लम्बे समय तक याद रख सकते हैं। चित्रों की कहानी लम्बे समय तक याद रखना ठीक व जल्दी समझ लेने का मुख्य कारण शायद यह है कि छात्र शब्द को सुनता या पढ़ता भर है। जबकि चित्र को छात्र देखता है समझने के लिए सोचता है और चित्र के विभिन्न हिस्सों में अंत: सम्बंध बनाकर लिखता है। जब किसी चित्र का वर्णन करता है तो उसे चित्र और उसमें हो रही विभिन्न घटनाओं की झलक शायद दुबारा याद आ जाती है।

उक्त सारी बातों से लगता है यदि छात्रों को बार-बार ऐसा करने के लिए अवसर दिया जावे तो उनकी लेखन शक्ति, चित्र समझने व विवरण करने की क्षमता व कल्पनाशक्ति का विकास होगा।

तीन अधूरी कहानी क्रमश: 1,2 एवं 3 जिसे अलग-अलग छात्रों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से पूरी करने की कोशिश की, साथ ही कुछ अन्य कहानियां भी हैं, जिन्हें बहुत से छात्रों ने एक जैसा ही लिखा है। कुछ शब्द निर्माण अशुद्धि से लेकर वाक्य निर्माण अशुद्धि के बाद भी, छात्रों का प्रयास कहानी पूरी करने का रहा है। कुछ छात्र नकल में

अकल की कमी के कारण-अंधे आदमी वाली कहानी में लोमड़ी की कहानी जोड़ गये।

अधूरी कहानी, आगे-छात्रों द्वारा पूरी की गई कहानी :

1. **एक अन्धा आदमी था। वो किसी भी जानवर पर हाथ फेर कर बता देता था कि यह कौनसा जानवर है। एक बार गाँव वालों ने उसकी परीक्षा लेने की सोची.....**

[अ] .....और एक रुपये की चिहलर उसके सामने रख दी उसने एक रुपये की चिहलर पूरी बता दी गांव वालों का उस पर विश्वास हो गया।

— शिवकुमार, कक्षा आठवीं

[ब] .....तो उस आदमी के पास एक शेर खड़ा कर दीया तो वह आदमी ने हाथ पेरते हुए कहा की एह तो बकरी है। तब वह शेर को गुशा आया तो उस आदमी को उस शेर ने खाडाल तो गांव के आदमीओं ने एहा कहा कि विचार आदमी मर गया तब बो आदमी की लास को नर्मदा नदी को ले चले तो उसके लड़के ने वह गांव वालो को गाली दी और कहा की मरे पीता जी की मत्यु कर वादी है। आपको यह नहीं मालूम थी कि मरे पीता जी देव नहीं सकेते थे। तो आपने शेर को सामने खड़ा क्यों क्या आपको मेरे पीता जी क्या बुरे लगते थे। जब वह आदमी ने कहा की बेटे हमें आपके पीता जी बुरे नहीं लगते थे। की हमने आपने पीता जी की परिक्षा ली थी तो शेर साला खा गया तो हम क्या करें आपके पीता जी को।

— राज मेहरा
कक्षा सातवीं

[स] .....उसके सामने हाथी खड़ा कर दिया और पूछा वह पहले सूड के सामने आया और टटोल के देखा तो वह अजगर जैसे समझ में आई फिर वह पैर की ओर गया ओर देखा तो वह चूरिया के जैसे लगा फिर वह पूछ की ओर गया वह सर्प के जैसे समझ में आई तो वह समझ गया कि यह हाथी है।

— रामकिशोर राजपूत
कक्षा आठवीं

[द] .....वह उसके पास गये और उस अन्धे आदमी से कहा की आप अन्धे होते हुए भी जानवरो को कैसे पैहचान लेते हो। तो वह बोला की आदमी सिफ्र आंख से ही नहीं देखता है वह अपने दिमाग से भी देख और समझ सकता है।

— लक्ष्मण कुमार
कक्षा चौथी

[ड] .....मैं पानी में इसलिये गीर पडी मैं पानी पीने आई थी और मेरा पैर खिसल गया में गिर पड़ी।

— गौरीशंकर
कक्षा आठवीं

1. .....पर उसको दिखता नहीं था। तो वह परीक्षा में फैल हो गया।

2. सब गांव वालों ने एक बकरी खाड़ी कर दी उस अन्धे आदमी ने उस जानवर पर हाथ पेरा वह जानवर में में में में करने लगी उस अन्धे आदमी ने बताया की यह बकरी है सब लोग हस पडे और दूसरे दिन गांव वालों ने एक कुत्ता लाकर रख दिया उस आन्धे आदमी ने उस कुत्तें पर हाथ रखा वह कुत्ता ने वह आन्धे आदमी को काट खाई वह आदमी ने कहा यह कुत्ता है।

3. कुत्ता एक कुत्ता था वह बहुत आदमी ने उसे पकड़कर उस अन्धे आदमी के पास.....

एक पेड़ पर एक घोस्ला था उसमें चुडया के बच्चे छोटे-छोटे थे एक दिन हवा जोर-जोर उसमें एक दम से उसे घर का सामान टूट गया उसमें से एक बच्चा निचे गिर गया उसको उडाके घर ले जाके पिजरे में वन्द कर दिया उसको दाने चुगाने लगे वह बच गया।

4. एक नकली जानवर गांव वाले ने बनाया।

5. मुझे नही मालूम वहा कौन सा जानवर था।

6. मैं कहता हूँ कि अन्धा आदमी कभी जानवरों को नहीं पहचान सकता और उसके पास जादू या कोई भी आईटम होगा तभी बता सकता है नही तो नही।

अधूरी कहानी एवं आगे छात्रो द्वारा पूरी को गई कहानी :

1. **एक गांव में सुन्दर और जवान बैल था। उसने कभी भी हल या बैलगाड़ी नही खींची थी। वो मस्ती में खेतों और जंगलों में घुमता फिरता और हल खींचते बैलों को चिढ़ाता, "कितने मूर्ख हो तुम दिन भर हल खींचपे रहते हो। मुझे देखो .....।**

[अ] .....में दिन भर खूब हरी-हरी घास चरता हूँ तुम भी मेरे साथ चलो तब सभी बैल उसके साथ चल दिये उन्हें कुछ नहीं मिला तों उन्होंने उस बैल को मार डाला और अपने मालिक के पास चले गये।

— हरिभजन रघुवंशी कक्षा सातवीं

[ब] .....तभी हल खींचते बेलों में से एक बेल ने कहा–अरे मूर्ख तू हमें ही मूर्ख क्यों बना रहा है। हम तो अपने देश के काम आ रहे किसाने के काम आ रहे अगर हम काम करना छोड़ दे तो तुझे नहीं मालूम क्या होगा वह हमें मालुम बेचारे किसान का परिवार भूखा मर जाएगा। अगर किसान लोग भूखें मरेंगे तो देश की गरीबी बढ़ेगी बेकारी बढ़ेगी और बैलो को भी अच्छा दाना मिलेगा और तू भूखा मरने लगेगा—दोनो बैलों के शब्द नहीं सुन्दर और जवान बोल को तीर की तरह लगा उसने भी सोचा की में भी मेरे देश के मेरे मालिक के काम आऊं दूसरे दिन जब उस सुन्दर एवं जबान बैल का मालिक दूसरे बैलो एवं उसको लेकर खेत पर गया तो वह सुन्दर बैल बखर के पास से नहीं गया जबकि पहले वह खेत पर पहुचते ही चरने लगता था फल स्वरूप किसान ने एक बैल को छोड़कर उस जवान बैल को जोता जिससे अच्छा खेत बना एवं पैदावार बढी जिससे उन सभी बैलो को पहले से दूनी खली मिलने लगी सभी बैल एवं उनके मालिक का परिवार खुशी से भर गया।

— कैलाश प्रसाद यादव कक्षा ग्यारहवी

हाथ का हाल

हां, हाथ का हाल बबलू ने पूछा, तो मेरे दिल पर आघात–सा लगा। मैं नहीं जानता सात साल का बबलू मेरे हाथ का हाल सहानुभूति से पूछ रहा था, या व्यंग्य में या अपने बचाव में, पर मुझे अवश्य यह अनुभूति हुई कि मुझे इस सीमा तक गलती नहीं करनी चाहिए थी।

घटना तब की है, जब मैं उसे पहली कक्षा की परीक्षा की तैयारी करा रहा था। हिन्दी के डिक्टेशन में उसने "र" अक्षर को बड़े भद्दे ढंग से लिखा। मैंने उसे ठीक लिखने का तरीका बताया, ठीक लिख कर बताया, दो बार सावधान भी किया। पर उसने अपनी आदत के अनुसार फिर जल्दबाजी में "र" अक्षर को वैसा ही लिखा। मैं धीरज खो रहा था। यद्यपि परीक्षा उसे देनी थी, पर उसका तनाव मैं भुगत रहा था। मेरे छिपे मन में यह आकांक्षा थी कि वह कक्षा में अव्वल आये, उसे सबसे अधिक मार्क्स मिलें। आखिर, अगली गलती पर एक थप्पड़ लगा ही दिया। सात साल का नन्हा बालक, शायद थप्पड़ उसे भारी पड़ी। वह दूर छिटक गिरा और रोने लगा। आंखों में आंसू, नाक में पानी, चिल्लाने की आवाज। मैं गुस्से में चिल्लाया, "चुप रहो, चुप, आवाज नहीं, ठीक से लिखो।" मेरे आदेशों में जैसे तारतम्य नहीं था। अचानक मैंने कहा —"जाओ नाक साफ करो, मुंह धोकर आओ।" मैं जैसे खिसियाना–सा महसूस कर रहा था, पर ऊपर से मैं अपने आपको ऐसे बता रहा था, जैसे कुसूर बबलू का था—क्यों बार-बार गलती की ? सजा देना ठीक था। बबलू मुंह धोकर लौटा, सहमा, डरा हुआ, थोड़ी कंपन थी उसके हाथों में, जब उसने पेंसिल उठाई। लिखने से पहले बोला, "पापा, आपका हाथ तो नहीं दुख रहा ?" "र" लिखकर उसने अपने हाथों से गाल ढक लिए। "र" की बनावट अभी भी ठीक नहीं थी। पर.....।

गुस्से की जगह अब पीड़ा ने ले ली। खिसियानी हंसी से मैंने पास बैठी श्रीमती जी की ओर देखा। मेरी हंसी को उन्होंने प्रश्न के रूप में लिया। मां की वेदना भरे हृदय से बोली, "और कांई कहवे लाई ? छोटे बच्चे को यों मारते हैं क्या ?" श्रीमती जी की इस टिप्पणी ने मेरे खिसियानेपन को घना बना दिया। मैं जैसे प्रमाणित अपराधी हो गया। पुचकारते हुए मैंने बबलू को पास बिठाया। मुझे अहसास हो चुका था कि सीखी आदत को अनसीखा करना नये ज्ञान को सीखने से कठिन होता है। काश, यह अहसास मुझे पहले हुआ होता। कितने ही दिनों तक बबलू का यह वाक्य मुझे अधीर होने से, सहनशक्ति खोने से बचाता रहा। इसमें सहायता करता रहा बबलू। जब भी मैं उसे लेकर पढ़ाने का सुझाव देता, वह बहाने बनाता और जब मेरा आग्रह आदेशात्मक होता तो वह बैठता, पर कहता–"देखो, आप मारोगे तो नहीं ?" और पढ़ते समय वह बीच-बीच में पेशाब करने अवश्य जाता।

सचमुच मैंने सिखाने की महत्वाकांक्ष में उसे डरना सिखा दिया था। उससे मुक्त करने में मुझे काफी दिन लगे, बहुत सहनशीलता और आश्वासन भरे शब्दों का सहारा लेना पड़ा। पर मैं एक बात सीख गया— बच्चे पर अपनी महत्वाकांक्षा का बोझ इतना न डालूं कि वह बच्चे के लिए डर का कारण बन जाए। **पी. वर्मा**

[स] .....मुझे देखो मै न तो गाडी में जतता हूँ न बखर में न पानी की मोट में न माल लेकर बाजार जाता है बस मुके पर नहीं चरना हैं यह सब बाते उसने बैलो से कही बैलो उससे तुम आलकि हो हम परिश्रमी है यह सब उष्लैल से समझा था फिर वह भी काम करने लगा ।

— कुमारी सुरेखा बाई

[द] .....में कितना मस्त जंगल में घूमता रहता हूँ क्योंकि मेरा कोई मालिक नही है इसलिए में जंगल में घूमता हूं जुते हुए बैल कहते है कि हम को तभी खाने को मिलता है जब कि हम हल बक्खर नहीं खीचे अगर नही खीचें तो हमको खाने को नही मिलेगा और हम भूखे रह रहकर मर जावेंगे इसलिए हमको काम करना पड़ता है ।

—रविशंकर बकोरे कक्षा आठवीं

1. .....में कितना आजाद हूं दिन जंगल में हर हमेशा चारा खाता हूं और तुम तो बन्धन में पड़े हो तुम्हें कितना बोझ खींचना पड़ता है । और तुम्हारी हालत भी कमजोर हो रही है । तुम्हारी उम्र जल्दी ढल जायेगी और मुझसे छोटे होकर भी जल्दी मर जाओगे । क्योंकि तुमसे अधिक बोझ कभी-कभी खिचता भी नहीं होगा तो तुम्हारा मालिक मारता भी होगा इसके कारण तुमसे अधिक में आजाद होने के कारण में तुमसे अधिक जीवित भी रहूंगा क्योंकि मैने कभी बैलगाड़ी, हल, बखर आदि का बोझ भी नही खींचा है ।

2. .....में भी तो देखता हूं कि मेरे भी खीचता है कि नहीं तो दूसरा बैल कहने लगा कि दोस्त में भी तुम्हारे साथ खीचूगा दोनों की दोस्ती हो गई और वह बैल अपने मालीक के पास गया और कहने लगा की में भी घूमता फिरता हूं में हल खीचूगा और वह अच्छी तरह सीख गया और उसके खेत में पैदावार हो गई तो माली बहुत खुश हुआ ।

3. में सांड बनकर रहता हूं ।

4. कितना कष्ट पहुचाते और में तुम्हारे को सहता देता हूं लेकिन तुम मेरे को ही मारते हो और आपकी सहती का कार्य पूरा करता हूं एक बैल बहुत ही जवान था । लेकिन वे चरने को नहीं जाता है इसलिए उस बैल वाले ने यह सोचा कि यह बैल कितना मूर्ख है तो नहीं जारा है और सुबह से साम तक घर रहता और शाम को घर से बाहर निकल जाता था तो उस बैल वाले ने सोचा कि यह बैल कितना मूर्ख है जो शाम को तो घर से भाग जाता और दिन भर घर रहता था तो उस बैल वाले ने सोचा कि यह कितना मूर्ख है ।

5. भोला और भालू
   लगा मागने रोटी आलू
   आलू बिकने चले हाथ
   में भालू खाने लगा खाट मे
   टूटी खाट गिर पड़ा भालू
   अब नही चाहिये रोटी आलू

6. बैल ने कभी गाड़ी नहीं खीची थी इसलिए बैलों को चिढाता था ।

7. में समय पर ही अपने खेतों में काम करता हूं । देखो जब चाहे जब खेतो पर काम करते रहते हो बैलों को पहले मस्ती में रखा जब काम का समय आया तब अपने बैलो को हल बैलगाड़ी में जोतने लगा । और बैल जोतने में आलस करते है । मगर तुम बहुत जवान बैलों को हल बैलगाड़ी में जोतने का ढंग नहीं है । तुम बहुत ही गमार है । देखो हम बहुत ढंग से काम लेते है । तो हमारे बैल बहुत ही अच्छे से काम करते हैं ? किसी आदमी को काम समय पर सही ढंग से करना चाहिये ।

8. उस जवान बैल ने हल खीचा तो वह मस्ती खेतो जंगलो फिरता किसान उसे पकड़ने जाता तो वह चिढ़ता उससे पकड़ता नहीं तो वह दिन भर खीचता और कहता की इसे बेच दीया जाय नहीं तो वह कभी मुझे मार डालेगा तो उसने उसको बेच दिया वह घर आया और कहता यदि में इसे बेचता नहीं तो वह मेरी जान ले लेता ।

9. .....फिर वो दूसरे बैल ने उस किसान का हल खिचा ।

10. .....मुझे देखो में कितना मसवा घूमता रहता हूं तुम बखर गाड़ी खिचते रहते हो ऐसे काम छोड़ो और मेरी तरह घूमो ।

11. मे जनाब बैल हूं इसलिए में हर बाकर नहीं खेचता हूं और आराम से इधर उधर घूमते रहता हूं और आप हर बाकर खीचते रहते हो ।

12. .....फिरने नही देतो हो इधर-उधर फिरने चलाते रहते है न मुझे आराम करने देतो ही मुझे की कभी हल से बैलगाड़ी बंखर मे हर मे सदा जोतते रहते हो मुझे सुस्तान

तक भी नही देते हो कि बराबर पेट ना भरने देते हो। सदा काम में लगाते रहते हो रात दिन काम ही काम रहता है मुझे कुछ दिन तक सुत्ताने भी दो।

13. पहलवान बना घूमता है।

14. मुझे देखो में एस के साथ घूम रहा आप मूर्ख जैसे खेतों में हल खिचते हो।

15. मे कुछ नहीं करता हूं।

अधूरी कहानी क्रमांक-3 एवं आगे छात्रों द्वारा पूरी की गई कहानी :—

3. **एक लोमड़ी थी। वो बड़ी चालाक थी। एक बार चालक लोमड़ी एक कुएं में गिर गई। तभी एक बकरी पानी पीने कुएं के पास आई। कुए में लोमड़ी को गिरा देखकर बकरी ने पूछा "अरे लोमड़ी मौसी-तुम नीचे क्या कर रही हो ?"**

लोमड़ी के दिमाग में एक चालाकी सूझी। वो बोली.....।

[अ] .....अगर तुम मुझे निकाल दोगे तो मुह मागा इनाम दूंगी? तो बकरी कुछ देर तक सोचती रही, फिर बोली अभी आई, और कुछ साधन लेकर आई फिर लोमड़ी को निकाल दिया, फिर बकरी बोली तुम मुझे मेरे मालिक के घर से निकाल दो में बस यही मांगना चाहती हूं। ज्यादे बड़ी चीज नहीं माँगना चाहती हूं। निकाल दोगे तो में तुम्हारा अहसान नहीं भूल सकती लोमड़ी बड़ी चालाक थी वो बोली घबराओ नहीं में तुम्हे निकाल दूगी, दो दिन का समय लगेगा और लोमड़ी जंगल में चली गई और ला पता हो गई बकरी रास्ता देखती रही।

—कमलेश सिंह राजपूत
कक्षा–सातवीं "ब"

[ब] .....और बोली मैं इस कुएं मे इसलिए उतरी हूं कि इस कुएं में जो भी स्नान करता है वो हमेशा के लिए पवित्र और शुद्ध हो जाता इतनी बात सुनकर बकरी को भी लोमड़ी की बात सूझी और कुएं में कुद गयी लोमडी उसके उपर बैठकर उपर छलांग लगा दी और उपर आ गई।

—यशवन्त सिंह चौहान

1. .....की नीचे पानी है तुम भी आ जाओ, पानी मीठा है अपन दोनों पानी पीयेगे फीर दोनों बाहर चलेंगे। बकरी बोली अरे बाहर कहां से चलेगे लोमड़ी बोली नीचे से बहुत अच्छा रास्ता है आजाओ।

2. .....लोमड़ी के मन में यह तरकीब सूझि कि लोमड़ी ने कहा कि इस कुऐ में मेने देखा तो इसमे एक लोमड़ी और दिखी तो मैंने उसे लड़ने की आवाज दी तो उसने भी वही आवाज निकाली तो में लड़ने के लिए कूद पड़ी बकरी ने भी देखा तो उसके मन में भी एही विचार आया और बकरी कूद पड़ी, जब वे दोनों कुऐ में कूद गई तो बकरी ने कहा कि इसमें एक बकरी और थी वह कहां गई क्या गायब हो गई बता लोमड़ी, लोमड़ी और बकरी बहुत खुश हुई जब वे तैरते-तैरते थक गई तो दोनों मर गई।

3. ..... में नहाने के लिए कूदी हूं तुम भी नहा लो।

4. में पानी पी रही थी इतने में एक कुत्ता मेरे ऊपर दोड़ा मेने भगने की सोची तो में कुए में गिर गई तो एक बाकरी आई वो मुझे पूछती है की अरी लोमड़ी मौसी तुम इस कुए में क्या कर रही हो।

5 .....की में एक चालकी है।

6. .....में आपको निकालने के लिए आई हूं आप तैयार रहना में आपके पास अ रही हूं।

7. .....में कुए के पास पानी पीने गई थी तो में उस कुए में गिर पड़ी अब मुझे हेड लो।

8. .....में कुए में गिर रही हूं।

9. .....में पानी पीने आई थी मेरा पैर फिसल पडा गिर पडी।

10. .....में नहाने के लिए घुसी हूं।

11. मे पानी पीने के लिए कुएं में गिरी।

12. में नहाने के लिए कुए में गिरी।

13. में कुए में गिर जाउगी।

14. अरे यह गमी का मौसम है। आज अमवस्या का दिन है आज के दिन जो भी कुए में स्नान करेग। उसके सोरे पास नष्ट हो जायगे और उसकी मौत होने पर वह स्वगी में जायगा इतनी बात लोमड़ी ने बकरी ने कही बकरी सुनकर और न कुए में कूद पडी और वह दोनों हो गायी।

चित्र कहाती [1]

इस कहानी को चित्रों द्वारा चार भागों में बांटा गया था पहले चित्र में दो बकरे आमने-सामने से आते एवं नदी का पुल बीच में दिखाया गया,

फिर अगले चित्र में दोनों बकरे एक दूसरे के सामने पुल पर खड़े दिखाया गया, फिर दोनों को पुल पर लड़ता दिखाया गया अंतिम चित्र में पुल पर से नीचे पानी में गिरता बताया गया था।

[अ] .....एक बकरा था। बकरा एक दिन बकरा पुल पर चढ़ रहा था। एक बार इस साईड से बकरा आ रहा था। और दोनों साईडो से आ रहे थे एक बकरा बोलता कि पेहेले में निकलूगा दूसरा बकरा कहता नहीं पेहले में निकलूगा ऐसे में दोनों का झगड़ा हो जाता है, दोनों एक दूसरे से नहीं डरते दोनों पुल पर लड़ने लगे। ऐसे में दोनों लड़ते-लड़ते दोनों बकरे नदी में गिर पड़े।

—सुनील कुमार कक्षा–छटवी

[ब] .....एक बार एक पुल पर एक बकरा जा रहा था। तब उधर से एक और बकरा आ गया तब वे दोनों लड़ने लगे तो लड़ते-लड़ते बहुत देर हो गई और वे उस नदी में दोनों गिर पड़े उधर से एक मगर आई तो उसने कहा की रोज तो इधर-उधर भटकना पड़ता था और आज तो कही जाना ही नही पड़ा यही शिकार मिल गई तब वह खा रही थी तो उधर से एक मगरमच्छ आ गया उसने उससे पूंछा तुमने यह शिकार कहा से लाई हो उसने कहा मैं तो उस पुल के पास जा रही थी तब ये दोनों मुझे वहा मिल गये उसने उससे कहा मुझे भी खाने दो मैं नही तो मैं तुम्ही ही खा जाऊगा।

—कमल किशोर वर्मा
कक्षा—आठवी

[स] .....एक समय की बात है किसी जंगल में एक रास्ता था उसमें एक नदी थी और उस नदी का पुल इतना छोटा था कि अगर दो जानवर आ जाये तो निकल नही सकते इसलिए उसी रास्ते से एक बकरी आ रही थी और एक बकरी सामने से और आ रही थी तो दोनों का क्रास बीच पुल के ऊपर हुआ तो दोनों में झगड़ा होने लगा और लड़ते–लड़ते दोनों नदी में गिर गए और दोनों की जान चली गयीं अगर एक के बाद एक निकल जाते तो दोनों कि जान नहीं जाती अगर एक के बाद एक निकल जाती इसलिए झगड़ा नही करना चाहिए झगड़े में कोई लाभ नही है और नरम होकर काम करना चाहिए।

—रामसिंह
कक्षा—आठवीं

अगले चित्र में चिड़िया का बच्चा पिंजरे में बन्द था और पिंजरा घर की खिड़की पर रखा हुआ था, पिंजरे के ऊपर दो और चिड़ियां उड़ रही थीं। अगले चित्र में कई चिड़ियां पिंजरे के बाहर उड़ रही थीं और दो चिड़ियां पिंजरे के कुन्दे में एक बेल फंसा रही थी। अगले चित्र में बहुत सी चिड़ियां पिंजरे को बेल में लटका कर लड़ती हुई दिखाई गयी थी। अगले चित्र में पिंजरा खुले मैदान में पड़ा था व एक चिड़ियां पिंजड़े में बन्द बच्चे को कुछ खिला रही थी, व एक चिड़ियां एक चूहे के पास खड़ी थी। अगले चित्र में चूहा पिंजरा काटता दिखाया गया था और बहुत सारी चिड़ियां पिजड़े के आसपास थीं व एक चिड़िया पेड़ की ओर उड़ रही थी, जिस पर लाल फल से लगे थे। अंतिम चित्र म चिड़िया चूहे को कुछ फल दे रही थी और दो चिड़ियां बच्चे को लेकर उड़ रही थी व काटा हुआ पिंजरा खाली पड़ा था।

[अ] .....एक गांव में एक मीनू नाम की एक लड़की रहती थी उसके माता-पिता उसकी 12 वर्ष की उम्र में तो स्वर्ग लोक पधार चुके थे। मीनू की कुछ जमीन भी थी उसे हर वर्ष कुछ पैसों से दूसरों को बेच दिया करती थी इसी से उसकी जीविका चलती रहती थी। मीनू के खेत पर एक पीपल का वृक्ष भी था। इसी पर चिड़ियों ने कुछ अडों भी दिये थे।

एक दिन जब चिड़ियों अपने बच्चों को छोड़कर बाहर भोजन की तलाश में निकल गयी थी, बच्चे अपने घोसले में लड़-झगड़ रहे थे तो उसमें एक बच्चा नीचे गिर गया। मीनू उसी दिन अपने खेत पर पहुंची तो उसे धूप ज्यादा लग रही थी तो वह छाया लेने के लिए पीपल के नीचे चली गयी जब उसने बच्चे गिरा देखकर डर सी गयी बच्चा नीचे तफफड़ा रहा था मीनू ने उसको प्यार से उठाया और उसे पानी पिलाया। बच्चे में जान आ सी गयी। बच्चों की मां जब घर आयी तो बच्चों ने सारा हाल सुनाया। चिड़िया बहुत प्रसन्न हुई। शाम हो चुकी थी। मीनू भी अपने घर की ओर आयी। उसने एक जीव की जान बचायी वह बड़ी खुश थी।

—रामभरोस प्रजापति
कक्षा—दसवी

[ब] .....एक बार एक किसान के घर के बाजू में चिड़िया ने अन्डे दिये।

जब उन अन्डों से बच्चे निकल आये तब उनकी मां अपने लिये एवं बच्चों के लिये खाने की तलाश में निकली बच्चों ने बहुत-बहुत इन्तजार किया मगर उनकी मां नहीं आयी। एक बच्चा उछलते हुये जमीन पर गिर गया तभी किसान की लड़की घर से बाहर निकली एवं उसने उस बच्चे को उठा लिया एवं अपने पिताजी से बाजार से एक पिंजड़ा मंगाकर उसमें उसे पालने लगी। परन्तु चिड़ियों को यह अच्छा न लगा। उन्होंने अपने के बच्चे को आजाद करने की तरकीब सोची। एक दिन जब किसान की बेटी ने पिंजड़े को उसी पेड़ से टांगा तब उन चिड़ियों ने एक लम्बी लता तोड़कर एवं उसे पिंजड़े में फसाकर उड़ चलीं एवं गांव को पार कर जंगल में पहुंची एवं धीरे-धीरे पिंजड़े को नीचे उतारा और कुछ चिड़ियां अपने दोस्त चूहे के पास गयी एवं कुछ चिड़ियों ने जंगल से इलली लाकर उसे खिलाई ।

चिड़िया चूहे से, चूहे भाई हम पर एक विपता पड़ी है अगर आप उसे दूर कर देगें तो हम आपका उपकार कभी नही भूलेगें। चूहे ने हंसकर कहा-कहिये क्या काम है और में आपके काम आया इसकी मुझे बहुत खुशी है। तब चिड़ियों ने आप बीती कहानी कही तो चूहा उछलता हुआ पिंजड़े के पास पहुंचा एवं उसने जाली को अपने पैने दांतों से काटा एवं चिड़िया के बच्चे को आजाद किया। फिर चिड़ियों ने कहा भाई चूहा हम तेरा एहसान कभी नहीं भूलेगें एवं पेड़ से कुछ फल तोड़कर उसे मुबारकबाद दिया।

—कैलाश प्रसाद यादव
कक्षा—ग्यारहवीं

[स] .....एक बार एक पेड़ पर एक चिड़िया ने अन्डे दिए वह कुछ दिन बाद बच्चे बन गए वे एक दिन घोसला में से नीचे गिर पड़ा तो एक गांव के लड़के ने उसे पिंजरे में बंद करके पेड़ में लटका दिया तो कुछ चिड़ियों ने उसे घांस के सहारे से ऊपर उड़ा ले गई। उन्होंने फिर बच्चे को निकालने की सोची तो वह गिल्हरी के पास गई और उसने उसे कहा की तुम मेरा एक काम कर दो तो में तुमको जो कुछ भी चाहती हो वो मैं लाकर दूंगी। तो गिल्हरी ने उसकी बात मान ली और वह उसके साथ वह चल दी वह उस पिंजरे के पास आई और उसकी रस्सी को अपने दांतों से उसको काट दी और बच्चे को बाहर निकाल लिया फिर वह चिड़िया बोली कि मैं अभी लाकर देयी हूं वह उस पेड़ के पास गई और वह फल की डाल सहित तोड़ लाई और उसको दे दी वह बहुत खुश हुई और चली गई चिड़िया और उसके बच्चे सुख और शांति से रहने लगे।

—बंसतकुमार कुशवाह
कक्षा—आठवीं

[द] .....एक पेर पर एक चिडीया ने घोसला बनाया था तो वे बच्चे जब वे पेड से नीचे गीर गया तब एक लड़की ने उसे उटा लाई तब वह चिडीया के बच्चे को अपने घर पीजड़ा में कोडकर रखा तो बहुत दिनों के बाद उस के एडा पर रोज बहुत सी चिडीया आती थी तो वे बहुत चिची करती थी तो एक दिन उसने पिजडा जमीन पर रख दिया तो चिडीयोओं ने जंगल में ले गई तब वे चिडीयां प्रति दिन उसे पीजड़े में ही खाना खीला थी। एक चिडीया में जब अकल भीडाई तो उसने जंगल में से ही एक चूहे को बुला लाई तो उसने पीजडा काड दीया तो वह चिडीया के बच्चो उड़ गया था।

—राजू मेहरा
कक्षा—सातवीं

घनश्याम तिवारी,
एकलव्य, होशंगाबाद

फाउन्टेन पेन

फाउन्टेन पेन में स्याही लिखते समय ही क्यों उतरती है ?

सुदर्शन निर्मल, कोरधा

सोख्ता कागज पर फाउन्टेन पेन से ठीक क्यों नहीं लिखा जाता है ?

हम सभी ने कभी न कभी फाउन्टेन पेन को खोला जरूर होगा। उसमें स्याही भरने के विभिन्न तरीकों के बारे में भी सोचा होगा। किसी पेन में टंकी जैसी होती है जिसमें स्याही उड़ेल कर उसे भरा जाता हैं। किसी में रबर ट्यूब लगी होती है जिसमें क्लिप से दबा कर स्याही भरी जाती है। किसी में पिस्टन होता है, जो या तो इंजेक्शन के सिरींज पिचकारी जैसा होता है या किसी पेंच का जैसा। यह दोनों व्यवस्थाए पिस्टन को आगे पीछे ले जाने का काम करती है। किसी में पतली प्लास्टिक की नली होती है किसी में नहीं। इन सब के तुलनात्मक फायदों पर फिर कभी बात करेंगे। वैसे क्या आप बता सकते है कि नली वाले और बगैर नली वाले पेनों में से किसमें अधिक स्याही भरेगी ? अभी वह समझने की कोशिश करें जो सभी फाउन्टेन पेन में होता है।

हर फाउन्टेन पेन में एक निब और एक स्याही फीड होती है। सामान्य भाषा में इस स्याही फीड को जीभ कहते है। हर निब बीचों बीच से दो भागों में बटी रहती है और मध्य में एक छेद रहता है। किसी भी पेन में यह देख सकते हैं।

स्याही फीड लेकिन अलग–अलग प्रकार के हो सकते है।

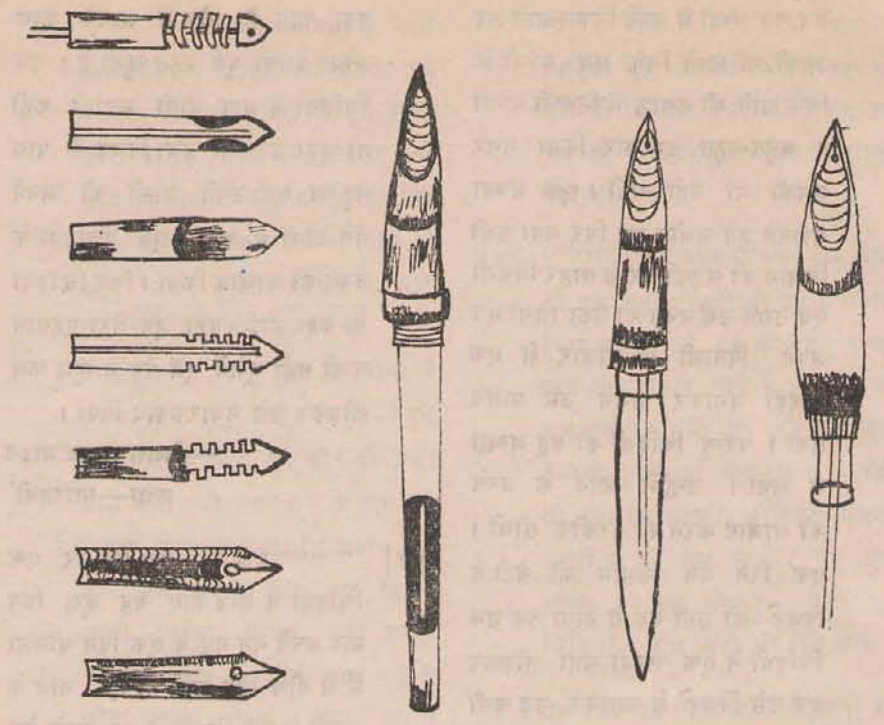

ट्यूब वाला, नालीवाला बगैर नाली वाला

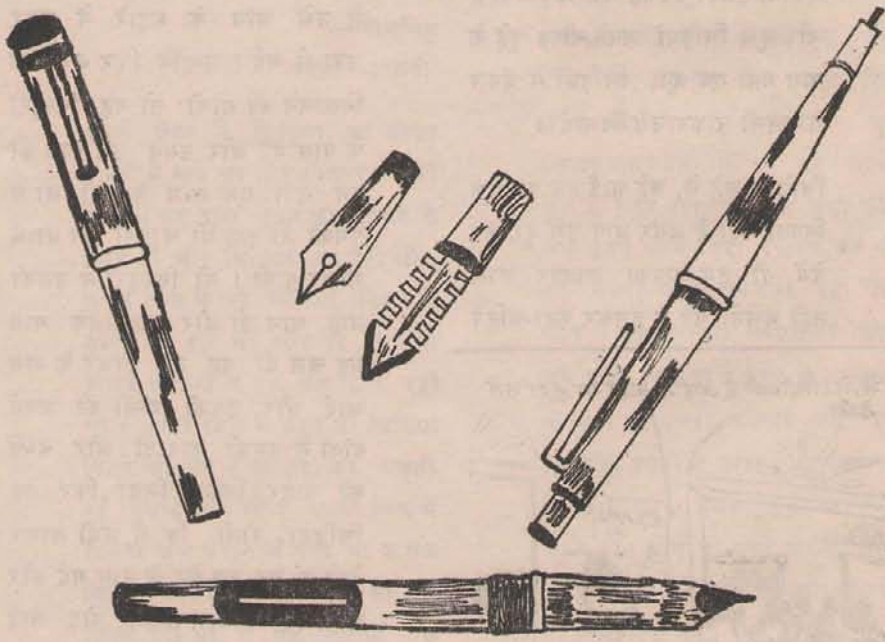

लेकिन इन सब के बीच में एक पतली सी नाली होती है, जो कि जीभ के नीचे के चौड़े सिरे से शुरू होकर नोंक तक जाती है। जीभ और निब ठीक लगने पर नाली निब के छेद के ठीक नीचे आती हैं। आइये, यह समझे कि लिखने के समय क्या होता है : पेन की ट्यूब में या टंकी में स्याही भरी रहती है। लिखते समय चूंकि पेन की निब नीचे होती है यह स्याही निब की ओर बह जाती है।

तोते की कहानी

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

एक जो चिड़िया थी, वह थी मूर्ख। वह गाती थी, शास्त्र नहीं पढ़ती थी। उड़ती-कूदती, लेकिन नहीं जानती थी कायदा कानून किसे कहते हैं।

राजा ने कहा, 'ऐसी चिड़िया काम की तो है नहीं, और फिर ऊपर से जंगल के फल खाकर राजहाट में फल के बाजार का नुकसान करती है।"

मंत्री को बुलाकर कहा, "चिड़िया को शिक्षा दो।"

चिड़िया की तालीम का काम पड़ा राजा के भतीजे पर। पंडित लोग बैठे और उन्होंने खूब सोचा। प्रश्न था "इस चिड़िया की अविद्या का कारण क्या है? सिद्धांत निकला, चिड़िया जो मामूली तिनकों से घर बनाती है, उसमें काफी विद्या अटती नहीं। इसलिए सबसे पहले जरूरत है एक अच्छा पिंजड़ा बना दिया जाय।

राज पंडितों ने दक्षिणा ली और खुश होकर घर लौटे।

सुनार बैठे सोने का पिंजड़ा बनाने। पिंजड़ा ऐसा बना कि पूछिए नहीं। देखने के लिए देश विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता, शिक्षा की भी हद हो गई और कोई कहता, "शिक्षा अगर नहीं हो, भी 'पिंजड़ा तो बना खूब। चिड़िया का भी क्या भाग्य।

सुनार को थैली भर इनाम मिला और वह खुश होकर घर चल दिया।

पंडित लोग बैठे चिड़िया को विद्या सिखाने। सुरती सूंघकर बोले, "इतनी कम पोथियों से काम नहीं चलेगा।"

भतीजे ने तब पोथी लिखने वालों को बुलाया। पोथी कारकों ने पोथियों की नकल की और फिर नकलों की नकल कर पहाड़ जैसा ढेर लगा दिया। जिसने देखा उसी ने

फाउन्टेन पेन...

जीभ के निचले सिरे के सम्पर्क में आने के बाद यह स्याही पूरी जीभ पर फैल जाती है। इसमें निब की निचली सतह स्याही से भींग जाती हैं। यह स्याही निब को दो भागों में बांटने वाली कटाव से होकर निब की नोंक तक पहुंचती हैं। उसे दबाने से निब के दोनों पाटों के बीच की दूरी और ज्यादा बढ़ जाती है, जिससे स्याही ज्यादा मात्रा में नोंक तक पहुँचती है। यह स्याही कागज द्वारा सोख ली जाती है।

जैसे ही स्याही पेन से कागज पर जाती है, उसका स्थान लेने के लिए और स्याही आ जाती है। स्याही की नोंक की ओर चल पाए इसलिए यह जरूरी है कि नोंक की ओर गई स्याही का स्थान कोई और पदार्थ घेर ले। नहीं तो टंकी या ट्यूब में धीरे-धीरे निर्वात होता जायेगा। यह कमी फाउन्टेन पेन में हवा के छोटे बुलबुलों द्वारा पूरी की जाती है। निब के छेद का और जीभ की नली का यह एक महत्वपूर्ण कार्य है। छेद में से हवा छोटे-छोटे बुलबुलों के रूप में ट्यूब या टंकी में चली जाती हैं।

संक्षेप में पेन के लिखने का तरीका है जीभ का टका या ट्यूब से स्याही लेना। जीभ से स्याही का निब की सतह से होते हुए निब की नोंक तक पहुंचना और फिर कागज द्वारा सोखा जाना। कागज पर गई स्याही के स्थान पर निब के छेद में से होकर ट्यूब या टंकी में हवा का पहुंचना

दूसरा प्रश्न सोखता कागज पर न लिखा जा सकना इसी बात से सम्बन्धित है। लिखते समय कागज पर स्याही का लगना और फैलना इस बात पर भी निर्भर है कि कागज में सोखने की क्षमता कितनी हैं। यानी, उसके रेशों के बीच कितनी जगह है। यदि रेशों के बीच ज्यादा जगह होगी तो कागज ज्यादा स्याही सोख सकता है। ज्यादा स्याही लेने से कागज पर अक्षर मोटे हो जाते हैं और स्याही के धब्बे भी बन जाते हैं।

कागज पर लिखने में कागज की स्याही सोखने की क्षमता, पेन की स्याही छोड़ने की क्षमता, लिखने की गति व निब पर दबाव इन सब का प्रभाव लिखावट की सफाई पर पड़ता है। ज्यादा खुरदुरा कागज यानी, जिसकी सतह पर रेशों के बीच काफी खाली स्थान हैं, स्याही अधिक सोखता है और उससे धब्बे पड़ते है। ऐसे कागज पर लिखते समय गति यथासम्भव अधिक और दबाव बहुत ही कम हो तो लिखावट कुछ बेहतर हो सकती है। यदि लिखने वाला कभी ज्यादा कभी कम दबाव डालता है तो भी लिखावट में समानता नहीं आ पाती। कई साधारण पेनों में ट्यूब, टंकी में भरी स्याही की मात्रा बदलने के साथ स्याही आने की गति भी बदलती है। जैसे-जैसे स्याही कम होती है गति कुछ तेज होती जाती हैं और आखिर में कई बार धब्बे भी पड़ने लग जाते हैं। क्या तुम बता सकते हो ऐसा क्यों होता है?

कहा, "शाबाश ! विद्या और नहीं अटती ।"

लिखने वालों ने इनाम बैल पर लादा और फौरन दौड़ चले घर की ओर। घर–गृहस्थी में अब कोई कमी नहीं रही।

बहुमूल्य पिंजड़े की पहरेदारी के लिए भी भतीजों की सीमा नहीं। मरम्मत तो लगी ही रहती। जिस पर झाड़पोंछ, पालिश करने की छटा देख सभी ने कहा, 'उन्नति हो रही है।' खूब लोग लगे, और उन पर नजर-निगरानी के लिए और भी लोग लगे। उन्हें मुट्ठियां भर-भर माहवारी मिली और उनके संदूक भर गए। वे और उनके चचेरे ममेरे और मौसेरे भाई, रिश्तेदार खुश होकर बैठकखाने में गद्दी लगाकर बैठ गए।

दुनिया में अभाव है बहुत सी चीजों का लेकिन निन्दकों की कमी नहीं। उन्होंने कहा, "पिंजड़े की उन्नति तो हो रही है पर चिड़िया की खबर कोई नहीं रखता।"

बात राजा के कान में गई। उन्होंने भतीजे को बुलाकर कहा, "भाई यह क्या सुनता हूं ?"

भतीजा बोला, "महाराज अगर सच बात सुनना चाहते हो तो बुलाइए सुनारों को, पंडितों को, लेखकों को, उन्हें बुलाइए जो मरम्मत करते हैं, और जो मरम्मत की निगरानी रखते हैं। निन्दा करने वालों को खाना नहीं मिलता इसलिए ऐसी ओछी बातें करते हैं।"

उत्तर सुनते ही राजा परिस्थिति को स्पष्ट समझ गए और तभी भतीजे के गले में चढ़ गया सोने का हार।

तालीम कैसी तेज रफ्तार से चल रही है, राजा की इच्छा हुई खुद देखने की। इसीलिए एक दिन दोस्तों और आमात्यों को साथ ले वे खुद शिक्षा शाला में पहुंच गए।

ड्योढ़ी के पास जैसे ही पहुंचे, बजने लगे शंख, घण्टे, ढाक-ढोल, नगाड़े, नफीरी शहनाई, बांसुरी, कांसे, खोल, मृदंग और करताल, ताल। तंडित गला फाड़े चुटिया हिला करने लगे मंत्र–पाठ।

मिस्त्री मजदूर. सुनार, लेखक, मरम्मत-कार, चचेरे, ममेरे, मौसेरे भाई सभी जय ध्वनियां चिल्लाने लगे।

भतीजा बोला, महाराज ! कांड देख रहे हैं।"

महाराज बोले, "आश्चर्य आवाज तो कम नहीं।"

भतीजा बोला, "केवल आवाज नहीं उसके पीछे अर्थ भी कुछ कम नहीं।"

खुश हो राजा ज्यों ही ड्यौढ़ी पार कर हाथी पर चढ़ने लगे उसी समय झाड़ी में छिपा निन्दक निकला और बोल उठा, "महाराज, चिड़िया को भी देखा ?" "राजा चौंके और बोले, 'ओह हो याद ही नहीं रहा। चिड़िया को तो देखा ही नहीं।

लौटकर पडित से कहा, "तुम लोग चिड़िया को कैसे सिखाते हो, उसका कायदा देखना है।" देखा और देखकर खूब खुश हुए। कायदा चिड़िया से इतना बड़ा कि चिड़िया दिखाई भी नहीं देती। मन में लगता है कि चिड़िया को न देखने से भी चलेगा। राजा समझ गए आयोजन में कोई कमी नहीं। पिंजड़े में न दाना न पानी; केवल ढेर-ढेर पन्ने पोथियों से फाडकर कलम की नोक से चिड़िया के मुंह में भरे जा रहे हैं। गाना तो बन्द हुआ ही चिल्लाने के लिए गले का रास्ता भी हो गया बन्द। देखते ही शरीर में थरथरी लग जाती। इस बार राजा हाथी पर चढ़ते समय कान ऐंठने वाले सरदार से कह गए कि निन्दा करने वालों के अब अच्छी तरह से कान ऐंठ दिए जाएं,

चिड़िया दिन पर दिन बदस्तूर अधमरी हो चली। पालक लोगों ने इसे समझा आशा-जनक, फिर भी अपने स्वभाव-दोष के कारण वह प्रात: आलोक की तरफ देखती और दु:खी होकर छटपटाती। यहां तक देखा गया कि कभी-कभी चिड़िया अपनी कमजोर चोंच से पिंजड़े की सलाखें काटने की कोशिश करती।

कोतवाल कहता, "यह क्या बेअदबी ?"

तब शिक्षा-महल में लुहार अपनी हाँफनी, हथौड़ा, घन और अंगार ले हाजिर हो गए। खूब दसादम ठोक-पीट चली। लोहे की जंजीर बनी, चिड़िया के पंख भी काटे गए। राजा के सालों ने मुंह हांडी जैसा कर सिर हिला कर कहा, "इस राज्य में पक्षियों में केवल अक्ल नहीं ऐसा नहीं. बल्कि कृत-ज्ञता भी नहीं है।" तब पंडितों ने एक हाथ में कलम एक हाथ में बेंत लेकर वह किया जिसे कहते हैं "शिक्षा"।

लुहार का धन्धा बढ़ा। उसकी औरत के गले में सोने का हार पड़ा और कोतवाल की होशियारी देख राजा ने उसे पगड़ी चढ़ाई।

चिड़िया मर गई। कब मरी, कोई खबर भी न रख सका। निन्दक निठल्ले ने फैला दिया, "चिड़िया मर गई।"

भतीजे को बुलाकर राजा ने कहा, "भाई यह क्या बात सुन रहा हूं ?"

भतीजा बोला, "महाराज ! चिड़िया की तालीम पूरी हो गई।"

राजा ने पूछा, "क्या वह अब कूदती है ?"

भतीजा बोला, "अरे राम।"

[शेष पृष्ठ 20 पर]

सांपों की दुनिया

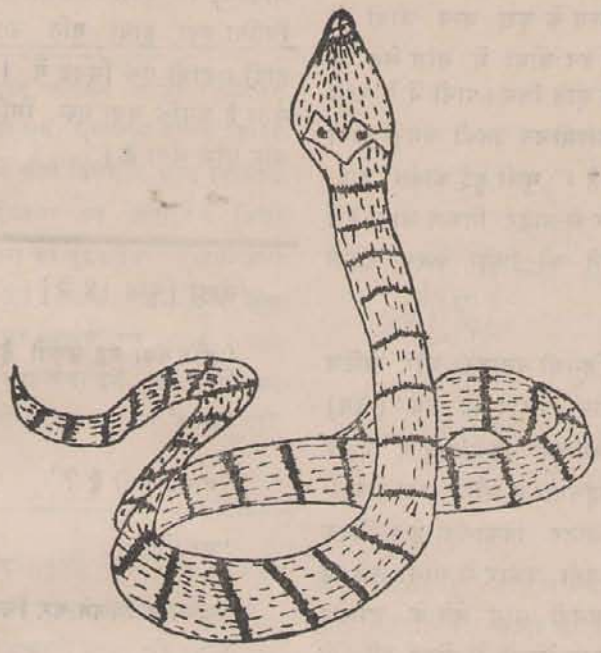

इंसान सांपों से हमेशा डरता आया है। उनका रूप, उनके चलने का तरीका और यह बात कि कई सांपों के काटने से मरते हैं, इस डर का कारण है। सांप 2000 से भी अधिक प्रकार के होते हैं। जिन में से अधिकतर जहरीले नहीं होते। सांप जमीन में, जमीन के ऊपर, जमीन के नीचे पानी में और पेड़ों पर रहते हैं, और वे दुनिया के लगभग सभी हिस्सों में पाये जाते हैं; केवल उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवीय क्षेत्रों और कुछ द्वीपों को छोड़कर।

जहरीले सांपों में जहर वाले दांत होते हैं, ये दाँत खोखले होते हैं और इनके ऊपरी सिरे खुले होते हैं। ये जहर पहुँचाने वाले दाँत सांप के ऊपरी जबड़े में होते हैं और उसके सिर में जहर ग्रन्थियों से नलियों द्वारा जुड़े रहते हैं। किसी जीव को काटते समय जहर ग्रन्थियों पर दबाव पड़ता है, और वहां से जहर निकल कर दांतों द्वारा उस जीव के शरीर में दाखिल हो जाता है। जहरीले सांप को उसके जहर वाले दांत तोड़कर हमेशा के लिए विषहीन नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि नए दांत पुनः निकल आते हैं।

जहरीले सांप आमतौर पर अपने शिकार को खाने के पहले जहर देकर मार देते हैं, या बेहोश कर देते हैं।

भारत में 200 से अधिक जातियां पाई जाती हैं जिनमें 10 से. मी. वाले वर्म सांप (worm shake) से लेकर 6 मीटर लम्बे अजगर शामिल हैं। सांप भारत के लगभग सभी इलाकों में मिलेंगे, गर्म समुद्र (warm sea) से लेकर रेगिस्तान में, दलदलों, झीलों, खेतों जंगलों और पहाड़ों पर। यहां तक कि हिमालय पर पांच हजार मीटर तक की ऊंचाई पर सांप मिलते हैं।

भारत में सांपों के बारे में वास्तविक

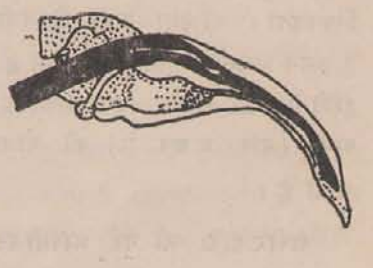

जानकारी की तुलना में कहीं अधिक भ्रामक जानकारियां फैली हुई हैं। लोग तरह-2 की कहानियां में और झाड़फूंक या जादू-टोने वाले इलाजों में विश्वास करते हैं। ऐसा माना जाता है कि दो सिर वाला सांप होता है, जो छः महीने एक सिर की दिशा में और छः महीने दूसरे सिर की दिशा में चलता है। कहा जाता है कि पूजा के समय नाग नियमित रूप से प्याली में रखा दूध पी जाता है। हालांकि इस तरह के विश्वास दिलचस्प और मजेदार हैं, मगर इनके पीछे कोई सच नहीं है। प्रायः सभी जानते हैं कि सांपों को सुनाई नहीं देता। वह तो केवल बीन के हिलने डुलने के साथ-साथ झूमता है। अगर सपेरा सांप के पास केवल अपनी मुट्ठी हिलाये तो भी सांप उसी प्रकार झूमेगा।

एक आम मान्यता यह भी है कि नागों के सिर पर मणी पाया जाता है। इसका बढ़िया उत्तर एक सपेरे ने इस तरह दिया था कि अगर नागों पर मणि पाया जाता तब हम कब के लखपति हो गये होते, न कि गरीब सपेरे रहते।

= अगले अंक में पढ़िये—दो मुंह वाले सांप का रहस्य और सांपों की दुनिया की और भी दिलचस्प जानकारी।

कीड़े सांस कैसे लेते हैं ?

जिन्दा रहने के लिए सभी जीवों को सांस लेना आवश्यक है। सांस लेना यानि आक्सीजन पाने के लिए हवा को अन्दर ले जाना, और कुछ बदली हुई हवा को बाहर निकालना। जो हवा बाहर निकाली जाती है उसमें आक्सीजन की मात्रा कम हो चुकी होती है और कार्बन डाइआक्साइड और पानी (भाप के रूप में) की मात्रा बढ़ जाती है।

शरीर द्वारा ली गई आक्सीजन कुछ खाद्य पदार्थों को 'जलाने' के काम आती है ताकि शरीर उनका उपयोग कर सके। बचे हुए (अवशेष) पदार्थ जिन में पानी और कार्बन डाइआक्साइड होते हैं। शरीर से बाहर निकाल दिए जाते हैं। और ऐसा करने का एक तरीका सांस द्वारा होता है। सांस लेने का सबसे सरल तरीका जैलीफिश और केंचुआ किस्म के कुछ अन्य जीवों में पाया जाता है। इन जीवों में सांस लेने के अलग अंग नहीं होते जिस। पानी में वे रहते हैं उसमें घुली आक्सीजन उनकी चमड़ी द्वारा सोख ली जाती है। घुली हुई कार्बन डाई-आक्साइड शरीर से बाहर निकल जाती है। इनके सांस लेने की क्रिया केवल इतनी ही है।

केंचुए में जिसकी बनावट और जटिल होती है एक खास प्रकार का द्रव (खून) होता है जो आक्सीजन को चमड़ी से अन्दर के अंगों तक पहुंचाता है और कार्बन डाई-आक्साइड को बाहर निकालता है। मेंढक भी कभी कभी इसी प्रकार से सांस लेते हैं जिसमें उनकी चमड़ी सांस लेने के उपयोग में आती है। मगर मेंढकों में फेंफड़े भी होते हैं, जिनका उपयोग उनके शरीर द्वारा आक्सीजन की आवश्यकता होने पर किया जाता है।

कीड़ों में सांस लेने का तरीका बड़ा ही अजीबो गरीब और दिलचस्प होता है अगर हम कीड़े का पेट या निचला हिस्सा ध्यान से देखें तो वहां बड़ी संख्या में बहुत ही छोटे (बारीक) छेद पायेंगे, इनमें से हर छेद तक ट्यूब (नली) से जुड़ा होता है जिसे ट्रेकिया कहते हैं। ट्रेकिया मनुष्य की सांस लेने वाली नली की तरह ही काम करती है। तो कीड़े हमारी ही तरह से सांस लेते हैं, अन्तर केवल इतना है कि हवा अन्दर ले जाने के लिये उनके पेट में सैकड़ों नालियां होती हैं। कीड़े की तरह छोटे जीव में ये नलियां बहुत कम जगह लेती हैं। मगर क्या तुम कल्पना कर सकते हो कि अगर आदमी के सांस लेने का अंग कीड़ों की तरह होता तो क्या होता, शायद दूसरे अंगों के लिए जगह ही नहीं बचती।

हां, एक दिलचस्प बात और सांस लेने की गति बहुत हद तक किसी जन्तु के आकार पर निर्भर करती है। आकार जितना बड़ा होगा गति उतनी ही धीमी होगी। हाथी एक मिनट में 10 बार सांस लेता है जबकि चूहा एक मिनिट में 200 बार सांस लेता है।

★ ★

तोता [पृष्ठ 18 से]

"और क्या वह उड़ती है ?"

"ना।"

"गाना गाती है ?"

"ना।"

"दाना न मिलने पर चिल्लाती है ?"

"ना।"

राजा ने कहा, "एक बार चिड़िया को लाओ तो देखें।"

चिड़िया लाई गई। साथ कोतवाल आया, चपरासी आया और आया घुड़सवार।

राजा ने चिड़िया को अंगुली से दबाकर देखा। न उसने हां किया, न हूं। केवल उसके पेट से पोथियों के सूखे पन्ने खस्स-खस्त, गज्ज-गज्ज करने लगे।

[गांधी मार्ग अगस्त 1985 से साभार]

होशंगाबाद विज्ञान
पढ़िए
मूल्य एक रुपया

अंध विश्वास निवारण

यतीश कानूनगो

लोक विज्ञान संगठन बम्बई, किशोर भारती, बनखेड़ी एवं एकलव्य देवास द्वारा देवास जिले में तीन दिवसीय अन्ध विश्वास निवारण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य स्थान हाटपीपल्या था। दिनांक 27 सितम्बर को खुले मंच पर चमत्कारों का प्रदर्शन चार हजार जनता के बीच किया गया तथा इन चमत्कारों का रहस्य भी खोला गया। पढिए, इसके बारे में.....

एक दुबला-पतला बड़ी-बड़ी आंखों वाला, माइक पर आकर घोषणा करता है। घोषणा में चमत्कारी बाबा श्री सदानन्दजी महाराज के चमत्कारों, भक्ति एवं कल्याण-कारी कामों को बढ़ा चढ़ा कर बताया जाता है। बीच-बीच में जनता की भावना का उपयोग लेकर सदानन्द महाराज की जय भी बुलवाई जाती है। बाबा की प्रतीक्षा में लगातार उनके गुणगान की कसीदाकारी चलती रहती है तथा बीच-बीच में जय-जय-कार। प्रस्तुती की पूर्ण तैयारी का सिगनल मिलते ही तीन बार बाबा का जयकार करवाया जाता है।

सड़क के दूर किनारे से भगवा तेहमत व भगवा लम्बा कुर्ता पहने, जूट धारी, चश्मा लगाये, एक हाथ से माला फिराते हुए व आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ उठाते हुए बाबा स्टेज की ओर बढ़ते हैं। उनके साथ भगवे साड़ी ब्लाउज में है उनकी प्रमुख चेली। पीछे दो और चेलियां व अन्य कई भक्त श्रद्धा विभोर बाबा के पीछे चले आ रहे हैं। बाबा के स्टेज पर आते ही चेले बाबा को श्रद्धा से चरण स्पर्श करते हैं। बाबा आशीर्वाद देने की मुद्रा में माला फेरते हुए बैठ जाते हैं। चेला पुनः माइक पर बाबा की प्रशंसा करने लगता है। बाबा दोनों हाथ आशीर्वाद मुद्रा में दिखाकर घुमाने लगते हैं। यह स्पष्ट हो जाता है कि हाथ पूरी तरह खाली हैं, हाथ घुमाते हुए वे ईश्वर से कुछ माँगने का दिखावा भी करते हैं। माईक वाला मुख्य चेला कहता है कि बाबा अब चमत्कार से आप लोगों को प्रसाद देने वाले हैं। दो चार व्यक्तियों को स्टेज पर बुला लिया जाता है। बाबा उनके हाथ पर भभूत गिराने लगते है। श्रद्धालू भक्त भभूत का तिलक लगा लेते हैं और बाबा को नमन कर अपने स्थान को लौट जाते हैं।

चेला बताता है कि बाबा ने अग्नि पर पूर्ण अधिकार कर लिया है। भगवे वस्त्र वाली चेली कपड़े का एक गोला जलाकर बाबा के हाथ पर रख देती है। बाबा आग से खेलने लगते हैं, फिर बाबा मुंह खोल उसे मुंह में डाल लेते हैं। मुंह खोलकर अन्दर आग जलती दिखाते हैं। जनता में सन्नाटा छा जाता है। बाबा का मुंह बंद होते ही चेले का मुंह खुलता है- बोल सदानन्द महाराज की। अब बाबा अपनी तपस्या शक्ति से अग्नि उत्पन्न करेंगे। चेले की इस घोषणा के साथ ही लोटे में रखा एक नारियल चेली द्वारा बाबा के सामने रख दिया जाता है। कलश में पान लगे हैं, हार पड़े हैं। स्टेज पर दर्शकों में से एक व्यक्ति को बुलाया जाता है। चेला शुद्धिकरण हेतु हाथ धोने का निर्देश देता है। उस व्यक्ति को कलश देकर खड़ा कर दिया जाता है। बाबा कलश की ओर कुछ बुदबुदाते रहते हैं। बाबा का इशारा

पाकर चेली घी का पात्र बाबा की ओर बढ़ाती है, बाबा नरियल पर आहूती रूप में घी गिराते हैं। तेजी से अग्नि प्रकट होती है। चेले की आवाज गूंजती है, बोल सदानन्द महाराज की.....।

"बाबा अपने हवन पात्र व हवन कुण्ड में भी इसी प्रकार अग्नि प्रज्वलित करते हैं।" चेला निरन्तर बोल रहा है। सुन्दर आकार का एक हवन पात्र चेली बाबा के सामने रख देती है। पुनः एक व्यक्ति को स्टेज पर बुलाया जाता है। पात्र उसके हाथ में देकर हल्दी कुमकुम से उसकी पूजा की जाती है। घी की आहूती देते ही पुनः अग्नि प्रज्वलित होती है और आवाज उभरती है, बोल सदानन्द महाराज की.....।

चेले का धुंआधार प्रवचन चालू था— "बाबा अपने शरीर को कष्ट देकर आप लोगों के संकट हर लेते हैं। अब देखिये लोहे के एक तार को बाबा किस प्रकार अपनी जबान में से पार कर लेते हैं।"

बाबा ने एक सीधा तार जनता को दिखाया। अपनी जबान पर रखा और धीरे-धीरे जबान के पार कर दिया। अब तार जबान पर इस प्रकार लगा था कि आधा जबान से ऊपर व आधा जबान से नीचे। आवाज गूंजी, बोल सदानन्द महाराज की जय।

"पर पीड़ा को हरने वाले बाबा आपको भी पीड़ा महसूस नहीं होने देंगे। चेले ने एक पुरुष व एक महिला को स्टेज पर बुलाया। बाबा की चेली ने दोनों के हाथों पर पीछे की ओर चमड़ी में सुई डालकर निम्बु लटका दिये। कोई दर्द नहीं। बोल सदानन्द .....।

"बाबा अन्तरयामी हैं, आपके पास भी भभूत पैदा कर सकते हैं, आपको विभिन्न रूपों में आशीर्वाद एवं प्रसाद दे सकते हैं।" चेला बिना विराम के बोले जा रहा था।

जनता के बीच से पांच या दस पैसे के सिक्के मांगे गये। एक चवन्नी देने पर यह कहकर लौटा दी गई कि बाबा बड़ी राशि नहीं लेते। सिक्के देने वालों को स्टेज पर बुलाया गया। सिक्के के साथ उनके हाथ धुलवाकर पवित्र कराये गये। पवित्र हाथों से पवित्र सिक्का बाबा को दिया गया। बाबा ने सिक्के पर हाथ फेर पुनः देने वाले को वापस कर दिया। चेले के आदेश से भक्त सिक्के को मुट्ठी में बंद किये ईश्वर ध्यान करने लगे। मुट्ठी खोलने पर सिक्के के साथ भभूत पाकर बाबा की ओर नत मस्तक हुए। बोल सदानन्द महाराज की.....।

प्रसाद पाने के लिए एक श्रद्धालु भक्त को स्टेज पर आमंत्रित किया गया। बाबा ने उसे श्रीफल भेंट किया। चेले के आदेश पर भक्त ने श्रीफल फोड़ा। अन्दर से एक मूर्ति निकली, बोल सदानन्द महाराज की ..।

अब जनता के बीच कागज के टुकड़े बांट दिये गये। चेले ने इन कागज पर अपना नाम व एक शब्द लिखने को कहा। चिट्ठियां लिखी गईं तथा घड़ी कर वापस प्राप्त की गईं। अब बाबा एक-एक चिट्ठी उठाते अपने माथे से लगातार पढ़ते जाते, बिना खोले। बोल सदानन्द महाराज की....।

चमत्कारों से विभोर जनता के बीच से एक नव युवक उठकर स्टेज पर आता है। चेले को दूर हटाकर माईक पर ऐलान करता है-- "यह सब कोई चमत्कार नहीं, में यह सब कार्य करके दिखा सकता हूँ।" बाबा के सामने से तार उठाकर बताता है जो बीच में विशेष रूप से मुड़ा है, उसे जीभ में फंसा-कर बताता है, जो पिरोया हुआ सा नजर आता है।

जनता से आग्रह किया जाता है कि इस प्रकार के भुलावे में न आवें। सभी चकत्कार हाथ की सफाई या रसायनों का करिश्मा है।

अब शुरू होता है चमत्कारों का खुलासा :

1– भभूत हाथ में अंगुली (तर्जनी) एवं अंगूठे के बीच छिपाई जाती है। भभूत को गोंद-पानी में गोलियाँ बनाकर सुखाली जाती हैं। गोलियों का आकार हाथ में छिपाए जाने के योग्य रखा जाता है। कई अन्य गोलियाँ अन्यत्र [जैसे, कान पर, बालों में यहाँ तक कि जेब में भी] हाथ को हवा में घुमाकर खाली हाथ दिखाने का प्रदर्शन करने के बाद छुपी गोली हाथ में ले जाते हैं, उसे ऊँगलियों से पीसकर भभूत गिराते है। ध्यान बंट जाने से दूसरे हाथ से अन्य छिपी गोली लेने पर भी जनता का ध्यान नहीं जा पाता।

2– आग हममें से कोई भी खा सकता है। लगातार 3 सेकण्ड से अधिक शरीर के सम्पर्क में रहने पर ही आग उस भाग को जला पाती है। तेजी से एक हाथ से दूसरे हाथ में आग का गोला लेकर चलाने से या मुंह में रखकर मुंह बंद कर लेने से जलन नहीं होती। बंद मुंह में आग तत्काल बुझ जाती है।

3– नारियल या हवन पात्र में पोटेशियम परमेंगनेट [पानी में डालने की लाल दवा] रखा होता है। यह पिसा होने से पूजा के कुंकुम की भाँति दिखाई देता है। जब इसमें घी के नाम से ग्लिसरीन (घी के समान सफेद पदार्थ जो मुंह में छाले होने पर लगाते हैं या सर्दियों में शरीर पर लगाया जाता है।) डालने से रासायनिक प्रतिक्रिया होने से अत्यन्त ऊष्मा उत्पन्न होती है तथा आग लग जाती है।

गन्ने की कहानी

गन्ने की जबानी

रमेशदत्त शर्मा

कुछ लोग भले ही इस बात को अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना कहें लेकिन मेरे परबाबा ने मुझे बताया था कि उनके परबाबा के भी परबाबा को स्वर्ग से उतार कर इस धरती पर लाया गया था। कहानी कुछ इस तरह है कि एक बार महर्षि विश्वामित्र इस बात पर अड़ गये कि मैं तो राजा त्रिशंकु को जीवित ही स्वर्ग पहुंचाऊंगा। इधर देवताओं ने भी ठान ली कि हम त्रिशंकु को स्वर्ग की देहरी पर चढ़ने ही न देंगे। हुआ यह कि त्रिशंकु न तो स्वर्ग ही पहुंच सके और न धरती पर वापिस लौट सके। "माया मिली न राम" बिचारे अधर में ही लटके रह गये। बाबा विश्वामित्र ने उनके खाने-पीने का इंतजाम करने की सोची। उस समय मेरी सृष्टि की गई।

इस प्रकार पहले पहल मेरा स्वाद त्रिशंकु ने लिया। इस बात को अगर कपोल कल्पित माने तो भी मेरे परबाबा ने भारतीय होने के सम्बन्ध में अनेक प्रमाण मुझको बता रखे हैं। आप नहीं मानते तो लीजिये एक-एक कर गिना देता हूं।

प्राचीन साहित्य में

सबसे पहला प्रमाण तो यह है कि मेरा वर्णन भारत के प्राचीन साहित्य में सर्वत्र मिलता है। वेदों को संसार का सबसे पुराना ग्रन्थ माना जाता है और अथर्ववेद में मेरे गुण गाए गये हैं। जातक-कथाओं में गौतम बुद्ध के साथ ही मेरी कहानियां भी दी गई हैं। बाल्मीक रामायण, कालिदास के "रघुवंश" आदि में तो मेरा वर्णन है ही, साथ में चरक संहिता, सुश्रुत-संहिता, समय मातृका, कुट्टनीमतम तथा बौद्ध कवि अश्वघोष के "सौन्दरनन्द" काव्य आदि अनेक ग्रन्थों में भी मेरा नाम दुहराया गया है। महाकवि श्री हर्ष ने एक स्थान पर लिखा है–"कितना ही घास से ढकें "इक्षु" (ईख) का अंकुर तो प्रकाश की खोज में बाहर निकलता ही है।"

पंचतंत्र में

यहां तक कि पंचतंत्र में भी मेरे बहाने एक बड़ी अच्छी शिक्षा दी गई है। उसमें लिखा है कि, "सज्जनों की मित्रता पास आने पर उसी प्रकार मीठी होती जाती है जिस प्रकार गन्ने को ऊपर से चूसने पर क्रमशः मिठास बढ़ती जाती है। किन्तु दुर्जनों की मित्रता गन्ने की जड़ से ऊपर की ओर चूसने की भांति दिनों दिन फीकी पड़ती जाती है।"

प्राचीन काल में भारतवर्ष में जहां अन्य बहुत सी कथाएं प्रचलित थीं वहां मेरे रस से चीनी आदि बनाना भी एक अच्छी कारीगरी मानी जाती थी। "सुकलीतिसार" में दी हुई कला सूचियों में से एक "उख रस से भिन्न-भिन्न चीजें बनाना" भी है।

इब्नबतूता की बात

इन पुरानी किताबों को छोड़ें तो भारत की यात्रा करने वाले अनेक विदेशियों ने मेरे गीत गाए हैं। इब्नबतूता ने जब मालाबार तट पर मुझे उगते देखा और चखा तो इतना खुश हुआ कि अपनी किताब "सफरनामा" में मेरी बड़ी बड़ाई लिख गया। "आइने-अकबरी" में मेरी खेती करने और मुझसे शक्कर वगैरह बनाने के बहुत से तरीके बताए गए हैं।

सिकन्दर से मुलाकात

जिन योरोप वासियों ने मुझे पहले पहल देखा उनमें पहला नाम सम्राट "सिकन्दर" का है। उसको मैं इतना पसंद आया कि जब 327 ई0 पूर्व में वह भारत के दौरे से लौटा तो मेरे भाई-बहनों को बड़ी संख्या में लाद-कर ले गया। फिर तो जिसने भी मुझे चखा, मेरी जन्मभूमि भारत की मधुरता का लोहा मान गया।

दुनिया की सैर

इसके बाद तो मैंने दूर-दूर तक की यात्राएं कीं। 641 ई0 में स्पेन का चक्कर लगाया। नई दुनिया की सैर स्पेनियों तथा पुर्तगालियों की सहायता से की। इन लोगों ने 1420 ई0 में मुझे मैडीरा पहुंचाया। संयुक्त राज्य अमेरिका (यू0 एस0 ए0) जो आजकल संसार के सबसे समृद्ध देशों में है, वहां मैं सबसे पहले सन् 1741 में "लौसियाना" नामक स्थान में पहुंचा। आज मैं कहां नहीं हूं। संसार का प्रत्येक देश मेरी मधुरता से परिचित है।

विज्ञान की नजरों में

लीजिये आप तो पुराण और इतिहास की बातें भी मानने को तैयार नहीं। अब भी आपको शंका है। क्यों न हो, आखिर आप "स्पूतनिक युग" में रहते हैं न। बिना वैज्ञानिक प्रमाणों के कोई बात थोड़े ही मानेंगे। लेकिन मेरे पास उसकी भी कमी नहीं है।

वैज्ञानिकों का कहना है कि आज मैं जिस रूप में हूं उसका विकास मेरे पूर्वज "सैक्केरम बार्बेराई" से हुआ है। जिस तरह आप सब लोगों के पूर्वज कभी जंगलों में रहकर जीवन-यापन करते थे उसी भांति मेरे यह स्वनाम-धन्य पूर्वज भी वनचारी थे। जिस प्रकार बहुत से आदिवासी आज भी जंगलों में ही रहना पंसद करते हैं, मेरे यह पूर्वज भी भारत के जंगलों में बहुतायत से मिलते हैं। इसमें एक महान वनस्पति-शास्त्री हुए हैं जिसका नाम एन0 आई0

गुरु गुड़ हो रहे, और चेला शक्कर हुए

आप शायद यह जानना चाहें कि कि यह "शक्कर" "चीनी" कब से हुई। तो चलिए इतिहास की शरण में। चीनी लेखकों का कहना है कि 111 ई. पू. से पहले किसी ने चीन में मेरा नाम भी नहीं सुना था। बाद में नाम से तो सब परिचित हो गये पर शक्कर बनाना किसी को नहीं आता था। अत: चीन के तत्कालीन बादशाह ताईस्सुग ने 640 ई. पू. में विशेषज्ञों का एक दल शक्कर बनाना सीखने के लिए भारत भेजा। हुआ यह कि चीनियों को सिखाने वाले भारतीय गुरू तो गुड़ ही रह गए, चेला शक्कर से भी एकदम आगे बढ़ गए। मेरा तो यह विचार है कि इन चीनी चेलों द्वारा बनाई गई शक्कर ही चीनी के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

सुना आपने। इन चीनी भाईयों को शक्कर बनाना आपने सिखाया। आप लोग चाय रोज पीते हैं। शक्कर न मिलाई जाय तो कड़वी होती है चाय। यह चाय भारत मे पुर्तगालियों द्वारा लायी गई। उस समय उसका नाम था "चायना टी" जो आज सिर्फ "चाय" या "टी" रह गई है। तो चीनियों ने संसार को कड़वी चाय दी, हमने इसे मीठा करने के लिये शक्कर दी।

★

वाविलोव था। उन्होंने समस्त संसार में 11 आरम्भिक केन्द्रों की खोज की है, जहां सबसे पहले तरह-तरह की फसलें प्राकृतिक रूप में उगती रही थीं और फिर धीरे-धीरे दूसरे स्थानों में फैली। उनके अनुसार मेरा मूल निवास स्थान भारत ही है। यह तो मैं आपको पहले ही बता चुका हूं कि किस तरह मैं दुनियां के दूसरे देशों के मुंह लगा।

इन वैज्ञानिकों की तो माया ही निराली है। इनसे मेरा परिचय पूछिये तो कहेंगे— "यह ग्रेमिनी कुल की विशाल घास है।" इन लोगों ने मेरा नाम भी बड़ा लम्बा रखा है— "सेक्कैरम औफिसीनेरम"। यह लेटिन भाषा का नाम है। मगर यह भी मेरे भारतीय होने का बड़ा प्रमाण है। क्योंकि संस्कृत का एक शब्द है "शर्करा" जिसे आप सब लोग "शक्कर कह देते हैं। यह "शक्कर" लेटिन भाषा में "सेक्केरम" और अंग्रेजी में "सुगर" हो गया।

अंधविश्वास (पृष्ठ 22 से)

4– जो ताड़ी (तार) बाबा ने जबान में में घुसाई वह दूसरी ताड़ी थी। व बताने वाली दूसरी। ताड़ी विशेष ढंग से मुड़ी होती है जो जबान में फंसा लेने पर पिरोई सी नजर आती है।

कभी कभी लोग अपनी जबान को मुंह से बाहर निकालकर भी ताड़ी पिरो लेते हैं। यह इस प्रकार सम्भव हो पाता है कि वह अपनी जबान मुंह में छुपाकर मरे बकरे की जबान इस प्रकार रख लेते हैं जैसे अपनी जबान ही बाहर कर रहे हों। बहुत से चतुर चालाक तो अपनी जबान में स्थायी रूप से एक छेद कर लेते हैं। जैसे नाक-कान में कराये जाते हैं। बस उसी में तार डाल लेते हैं।

5-हमारे शरीर की सबसे ऊपरी पतली चमड़ी को यदि कुछ चुभोया जाय तो महसूस नहीं होता क्योंकि उस चमड़ी में संवेदन-शीलता नहीं होती। इसी चमड़ी को पकड़ कर सुई से निम्बू लटका देने पर कोई दर्द नहीं होता।

6–एल्युमिनियम के सिक्के (पांच या दस पैसे वाले) पर थोड़ा सा मरक्यूरिक क्लोराईड गीला कर लगा दें तो रासायनिक क्रिया से एल्युमिनियम क्लोराईड बन जाता है जो भभूत जैसा दिखाई देता है। मुट्ठी बन्द कर लेने से क्रिया की गति बढ़ जाती है व भभूत उड़ती नहीं।

7–नारियल की दाड़ी (जटा-जूट) के पास खोल में दो कमजोर भाग (जिन्हें आंख कहते हैं) होते हैं, इनमें छेद कर भूति अन्दर डाल देते हैं तथा छेद को रुई से बन्द कर नारियल दाड़ी द्वारा छुपा देते हैं। यदि आवश्यक समझें तो फेवीकॉल से दाड़ी के छेद पर ठीक से चिपकाया भी जा सकता है।

8–कागज की चिट्ठी पर लिखी बात बताने के लिये एक व्यक्ति को माध्यम (अपने में मिला लेना) बनाना होता है। वह विशेष ढंग से चिट्ठी मोड़ता है व अपनी कही बात लिखता है, या अपनी बात पर हामी भर देता है। इस विशेष चिट्ठी को छोड़ कोई चिट्ठी उठाकर माध्यम वाली बात बता दी जाती है। अब चिट्ठी खोल कर अगली चिट्ठी के लिये मसाला मिल जाता है। बस यों ही क्रम चलता जाता है।

आग (धधकते अंगारे, या जिसे चूल भी कहते हैं) पर चलने का रहस्य भी यही है कि पैरों को अंगारे से सम्पर्क में लगा-तार तीन सेकण्ड न रहने दें। बस शान से चले जाईये। हां, अंगारों पर राख न जमने दें। वह आपके पैर से चिपक कर सम्पर्क का समय बढ़ा देगी, और आपके पैरों में छाले आ सकते हैं।

इतिहास

मजदूर की निगाह में इतिहास की किताब

किन्होंने बनाये थे थीबिस नगर के सात-सात प्रवेश द्वार ?
इतिहास की किताब में तो लिखें हैं तमाम राजाओं के नाम !
मगर बड़े-बड़े पत्थरों की चट्टानों को जिन्होंने ढकेल–ढकेल कर उठाया था,
क्या वे राजा थे ?
ध्वस्त हुआ बेबीलोन
मगर हर बार नये सिरे से जिन्होंने उसे बनाया वो कौन लोग थे
सोना-झलकते लिमा नगर को जिन्होंने बनाया था,
नगर के किस घर में वे रहते थे ?
जिस शाम चीन की दीवार के निर्माण का काम खत्म हुआ,
उस शाम किस पनाह में लौट गये थे थके हुये राजगीर लोग ?
रोमन साम्राज्य विजय तोरणों से भरे हैं,
मगर किन्होंने उन्हें बनाया था ?
किन लोगों को जीता था रोमन सम्राट ने ?
गाना गाने से अमर बने हैं बाइजान्टियम,
मगर उनके तमाम घर-क्या राजमहल थे ?
जिस रात को बाढ़ से अचानक बह गया,
पुराण–कथा का अतलान्तिस शहर,
इस रात दिशाहीन बाढ़ के आगे खड़े होकर भी
क्या डूबते हुये आदमियों ने मालिक का मिजाज लेकर
अपने क्रीतदासों को बुलाया था ?
युवा सिकन्दर ने जीता था भारतवर्ष ।
क्या उन्होंने अकेले जीता था ?
सीजर ने गलों को मार भगाया ।
मगर क्या एक भी बावर्ची नहीं था उनकी फौज में ?
स्पेन का जहाजी बेड़ा ध्वस्त होकर समुद्र के नीचे खो जाने पर
स्पेन के राजा फिलिप ने घड़ों आंसू बहाया था,
मगर क्या और कोई नहीं रोया ?
सात साल व्यापी युद्ध में महान फ्रेडरिक विजयी हुये थे ।
और कौन विजयी हुये थे उनके साथ ?
इतिहास के पन्नों में विजय की कहानी,
मगर विजय-उत्सव का खर्च किन लोगों ने जुटाया ?
हर दस साल के बाद एक महापुरुष का आविर्भाव !
मगर किनकी गांठ की आखरी कौड़ी खींचकर
बना था इस महान आविर्भाव का रास्ता ?
मन में उमड़ती रहती हैं अनेकों छोटी-मोटी बातें
इस तरह के हजारों किस्म के सवाल !

बर्टोल्ट ब्रेख्त

('इतिहास' से साभार)

अनौपचारिक शिक्षा

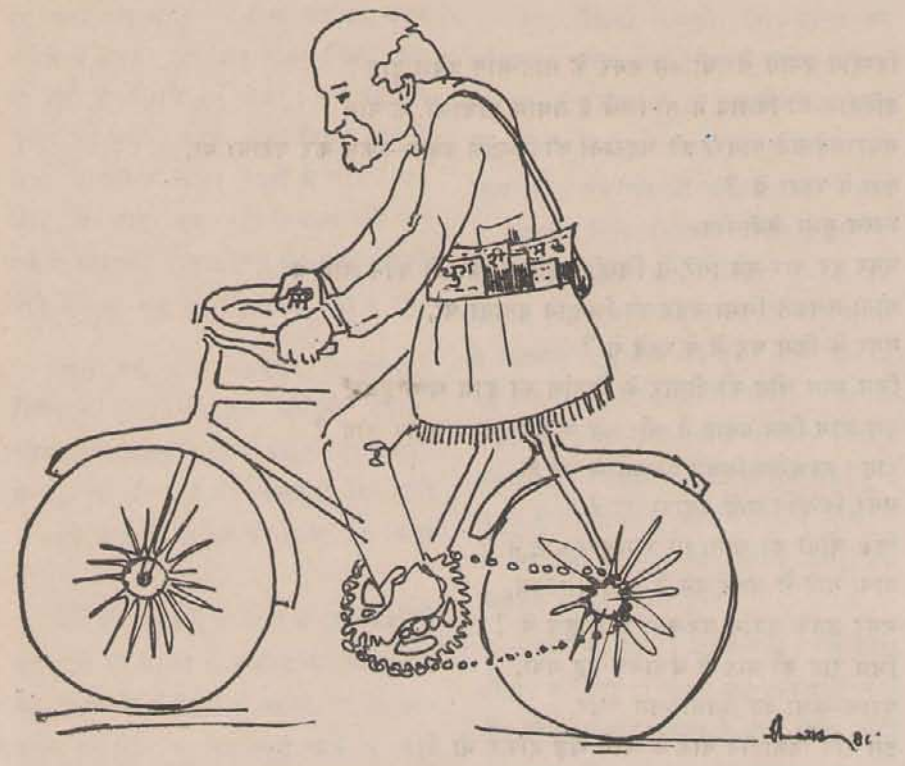

झोले में पुस्तकालय

होशंगाबाद जिले में शिक्षा एवं ग्रामीण विकास का कार्य कर रही संस्था किशोर भारती ने कुछ गांवों में चलित पुस्तकालय शुरू किए हैं। हमारे अनुरोध पर संस्था के कार्यकर्ता देवतादीन मिश्र ने पुस्तकालयों के उद्देश्य एवं प्राप्त हुए अनुभव "होशंगाबाद विज्ञान" के लिए लिखकर भेजे हैं।

गांव में जब भी निकलता हूँ, नन्हे-मुन्नों की टोली गांव के बाहर खेलते-कूदते पहले से ही मिलती है। लंबी "नमस्ते गुरुजी" दाग देते हैं। बस, आगे बढ़ जाता। इतना ही मन में आता, कि आखिर इनके लिए हम क्या कर रहे हैं ? यही बच्चे तो 10-15 साल के बाद बड़े होकर गांव के नागरिक बनेंगे फिर इनके साथ भी आज ही की तरह जूझना पड़ेगा। आखिर यह सिलसिला कितनी पीढ़ी तक चलता रहेगा। क्या ऐसा कोई उपाय हो सकता है कि इनके विचारों में परिवर्तन की कोई प्रक्रिया काम कर सकती है ? आखिर ये बच्चे कक्षा एक से पांचवीं तक गांव के स्कूल में घिसीपिटी पढ़ाई पढ़ेंगे ही। फिर कुछ मिडिल स्कूल को जायेंगे, कुछ भैंस की पीठ पर चढ़ेंगे। गांव के अधिकांश बच्चे तो प्रायमरी स्कूल में भी नहीं जाते। उन्हें अपने पेट के लिए भैंस की पीठ पर ही स्कूल शुरू करना होता है। इनके स्कूल में क्या अच्छी-भली गालियों से पढ़ाई शुरू होती है, यह आप गांव के चरवाहों के झुण्डों में देख सकते हैं।

मन में आया, यदि सबके लिए संभव नहीं है तो तो कुछ सोचो, शायद सबके लिए आज नहीं तो कल कुछ रास्ता सूझ ही जाय। गाँव में जवान, किशोर थोड़े बहुत पढ़े लिखे मिलते ही रहते हैं। ये भी आज की परिस्थितियों से समझौता किए चले जा रहे हैं। आखिर इनका दोष क्या है ? इन्हें नये विचार मिलें तो कहां से मिलें ?

फिर मेरे अपने जीवन में घटी घटनाओं की याद आई। जब मैं 12–14 साल काथा। अंग्रेजों का, राज था। आजादी की लड़ाई चरम सीमा पर पहुँच चुकी थी। उस समय स्व. लालबहादुर शास्त्री (भूतपूर्व प्रधान मंत्री) की प्रेरणा से हम लोगों ने बाल पुस्तकालय अपने गांव में खोला [1938 से 1942]। इस बहाने हम बालक, नवयुवक एक साथ बैठते थे। हमें आजादी की लड़ाई के बारे में पुस्तकालय से नई-नई जानकारी मिलती थी। क्रान्तिकारी साहित्य पर्चे, छोटी-छोटी किताबें शहर से आती रहती थीं। इस माध्यम से हम लोगों को अंग्रेजों से लड़ने की प्रेरणा मिली थी। 1942 आते–आते हममें से बहुत से लड़के "अंग्रेजो भारत छोड़ो" का नारा लेकर जंग में कूद पड़े।

यह बाल पुस्तकालय एक इतिहास हो गया। पर जिस आजादी के लिए हम लड़े, वह आज भी नहीं दिखती। कहां अटक गई ? या हम ही भटक गये ? अब आने वाली पीढ़ी को नये और प्रगतिशील विचारों से कैसे जानकारी दी जाय ? इन्हीं सवालों को लेकर अक्टूबर 17, 1983 के दिन सायकिल पर झोला लटकाया, झोले में 20-25 बाल साहित्य की पुस्तकें लेकर गांव माल्हनवाड़ा में निकल पड़ा। गांव में एक चौरस्ते पर लड़के गोली खेल रहे थे। वहीं बैठ गया। झोले से किताबें निकालीं, और फैला दीं। फिर क्या था, खेल बन्द हो गया। लड़के किताब उठा कर देखने लगे। सयाने लोग भी आ गये। पूछ–ताछ शुरू हो गई।

(शेष पृष्ठ 28 पर)

जरा सिर तो खुजलाइये

सबसे सन्तोषजनक और अच्छे उत्तर भेजने वालों को सम्पादक की ओर से पन्द्रह रु० का पुरस्कार दिया जायेगा।

चाय या काफी ?

मान लीजिये एक प्याली चाय है और एक प्याली काफी। अब अगर आप किसी चम्मच से एक चम्मच चाय लेकर काफी की प्याली में डाल दें और फिर उस काफी की प्याली से एक चम्मच मिश्रण वापस चाय की प्याली में डाल दें, तो बताइये क्या काफी में अधिक चाय पहुँची या चाय में अधिक काफी।

कान में बाली ?

अफरीका के किसी गाँव में 800 औरतें रहती हैं। उनमें से तीन प्रतिशत एक कान में बाली पहनती हैं। बाकी 97 प्रतिशत में से आधी औरतें दोनों कानों में बालियां पहनती हैं, और आधी एक भी बाली नहीं पहनतीं तो बताइये। कुल मिला कर उस गांव की औरतें कितनी बालियाँ पहनती है ?

हज्जू की दाढ़ी कौन बनाये ?

हरदा शहर में एक हज्जाम रहता है। हज्जू जो शहर के उन सब लोगों की दाढ़ी बनाता है, जो अपनी दाढ़ी खुद नहीं बनाते। अब बताइये कि हज्जू अपनी दाढ़ी खुद बनाता है या नहीं ?

यहां परेशानी यह है कि अगर हज्जू अपनी दाढ़ी नहीं बनाता तब तो उसे अपनी दाढ़ी बनानी चाहिये। और अगर वह अपनी दाढ़ी बनाता है तो उसे अपनी नहीं बनानी चाहिये, क्योंकि वह तो केवल ऐसे ही लोगों की दाढ़ी बनाता है जो अपनी दाढ़ी आप नहीं बनाते।

किस दुकान में बाल कटवायें ?

एक तर्क शास्त्री किसी छोटे शहर में गया हुआ था और कुछ समय बाद पर उसने तय किया कि अपने बाल कटवायेगा। उस शहर में केवल दो हज्जामों की दुकानें थीं। तर्कशास्त्री ने पहली दुकान देखी। वह बेहद ही गन्दी थी। हज्जाम के अपने बाल भी बढ़े हुए थे, दाढ़ी लम्बी हो रही थी और कपड़े मैले कुचैले। दूसरी दुकान बहुत साफ सुथरी थी। वहाँ के हज्जाम के कपड़े साफ थे और बाल व दाढ़ी ठीक प्रकार से कटे हुए थे। तर्क शास्त्री ने तय किया कि वह पहली दूकान में बाल कटवायेगा। बताइये क्यों ?

मोटर और स्कूटर सिंह

मोटर सिंह की गाड़ी 40 कि. मी. प्रति घंटा की रफ्तार से चलती है। उसके दोस्त स्कूटर सिंह की गाड़ी केवल 20 कि. मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चलती है। दोनों अपनी-अपनी बीबियों के साथ अपनी-अपनी गाड़ियों पर पिकनिक करने निकलते हैं।

45 कि. मी. चलने के बाद मोटर सिंह अपनी गाड़ी घुमाकर वापस लौटे। लौटते में उसको अपने दोस्त स्कूटर सिंह की गाड़ी मिली। दोनों परिवारों ने वहीं पर पिकनिक की। मोटर सिंह ने कुल कितने घंटे अपनी गाड़ी चलाई ?

कितनी ईंटें ?

कितने घन ईंटों की जरूरत पड़ेगी ताकि जमीन पर फैलाने पर चौकोर बन सके। और जमा करने पर घन बन सके।

तार की बात

एक तार भू-मध्य रेखा पर लपेटा है। मानलो पृथ्वी एकदम गोल और उसकी सतह एकदम समतल है। अब, तार को काटकर उसमें दो गज तार जोड़ने पर वृत्त तार पृथ्वी से कितने दूर हट जाएगा ?

नदी पार

दो पहलवान अपने दो बेटों के साथ गांव से शहर जा रहे थे। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। नदी पार करने का एक ही तरीका था—नाव से चलना। पर नाव केवल 200 किलो तक का वजन लेजा सकती थी, और एक-एक पहलवान 200 किलो वजन के थे। जबकि, उनके लड़कों का वजन उनसे आधा था। यानी, 100 किलो था।

अब बताओ, चारों ने नदी कैसे पार की होगी ?

सोने का लोटा

सात लोटे (क, ख, ग, घ, च, छ, ज) लाइन से खड़े किए गए हैं। उनमें से एक सोने का बना है। अब यदि 'क' से गिनती शुरू करते हैं तो 1000 तक गिनने पर आप उस सोने के लोटे पर पहुंचेंगे। क्या आप बिना गिनती किए सोने का लोटा पहचान सकते हैं ?

अंक 18 की पहेलियों के हल

1. नदी की चाल

मान लीजिये नदी की चाल है "क" किलोमीटर प्रति घण्टा। नाव की चाल स्थिर जल में दी हुई है 7 किलोमीटर प्रति घण्टा। तब नदी के बहाव के साथ नाव की चाल

होगी 7+क किलोमीटर प्रति घण्टे। और नदी के बहाव के विरुद्ध नाव की चाल होगी 7−क किलोमीटर प्रति घण्टे। क्योंकि बहाव के साथ की नाव की चाल बहाव के विरुद्ध चाल की $2\frac{1}{2}$ गुनी है इसलिये

$$7+क = [7-क] \times \frac{5}{2}$$

$$या \quad क + \frac{5क}{2} = \frac{35}{2} - 7$$

$$या \quad \frac{7}{2} क = \frac{21}{2}$$

क = 3 कि. मी. प्रति घंटे

2. **एक गोले के टुकड़े**

किसी गोल आकार को चार सीधी रेखाओं की मदद से अधिक से अधिक ग्यारह हिस्सों में बांटा जा सकता है। ऐसा करने के लिए केवल इतना ध्यान रखना है कि हर बार जब एक और रेखा खींची जाये तो वह गोल आकार के पहले से कटे अधिक से अधिक टुकड़ों को काटती हुई जाये।

3. एक से चालीस कि. ग्रा. तक के किसी भी वजन को तौलने के लिये कम से कम चार बांट चाहिये। इन बांटों का वजन होगा 1,3, 9 और 27 कि. ग्रा. मगर यह ध्यान रहे कि किसी वजन को तौलने के लिये यह बांट तराजू के दोनों पलड़ों पर रखने पड़ सकते हैं।

4
$$\begin{array}{r} S\ E\ N\ D \\ +M\ O\ R\ E \\ \hline M\ O\ N\ E\ Y \end{array}$$

इस का हल है
$$\begin{array}{r} 9567 \\ +1085 \\ \hline 10652 \end{array}$$

पिछले अंक में इस पहेली के छपने में थोड़ी त्रुटि हुई थी। MONEY के अक्षर जैसे यहां छपे हैं उन्हीं स्थानों पर होने चाहिये।

5. केवल तीन तिकोन फिर से जमा कर (क) से (ख) लाने का तरीका दिखाया गया है। [क] चित्र से 1,5 और 9 नम्बर तिकोन हटा कर (ख) चित्र में दिखाये तरीके से जमा देने पर पहेली का हल निकल आता है।

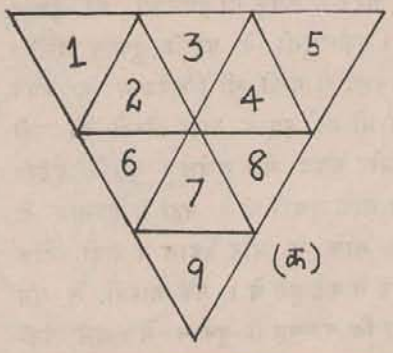

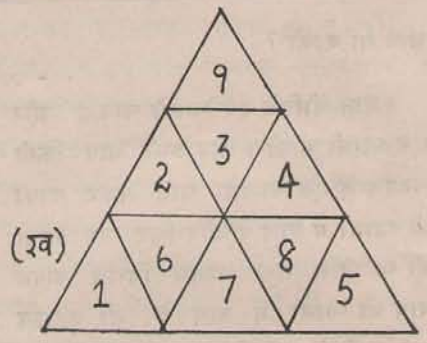

पुस्तकालय (पृष्ठ 26 से)

यह किताबें कैसे मिलेंगी? हमें पढ़ने को कैसे मिलेंगी? कब-कब मिलेंगी? और भी किताबें हैं कि इत्ती ही? सवाल पर सवाल। किशोर भारती को लोग पहले से जानते हैं। किशोर भारती के पुस्तकालय को भी जानते हैं। इसलिये समझाने में देर नहीं लगी। हमने उन्हें बताया कि आप लोग पुस्तकालय में आते नहीं। इसलिये पुस्तकालय ही चल कर यहां तक आ गया है। अब आप इससे दोस्ती कीजिये।

सयानों ने दिलचस्पी ली। उसी दिन 12 लड़के 25-25 पैसे देकर सदस्य बने और किताबें लीं। ऐसा ही सिलसिला दूसरे गांव, मछेरा खुर्द में शुरू हुआ। वहां भी पहले दिन तो 16 लड़के सदस्य बने। सप्ताह के दिन गांव में ही दो घंटे के लिए सचल पुस्तकालय पहुंच जाता रहा है। बच्चों के साथ ही नौजवान भी सदस्य बनने लगे। सदस्य संख्या बढ़ती गई। पहुंचने के दिन यदि देरी हो गई तो लड़के गोल झुंड बनाकर किशोर भारती के लिए चल पड़ते, रास्ते में उन्हें लेकर गांव लौटता। पुस्तकों को जमा करता नई पुस्तके उन्हें देता। जिज्ञासा इतनी कि मेरे पहुंचने के दिन अधिकांश बच्चे गांव के बाहर हाथ में किताबें लिए इकट्ठे मिल जाते फिर वहीं गांव भर में हल्ला कर देते हैं कि किताबें जमा करो और दूसरी ले जाओं।

एक दिन तो गांव के अधिकांश सदस्य आधे रास्ते पर मिल गए। मुझे सड़क पर ही पुस्तकालय खोलकर बैठना पड़ा। कई छोटे-छोटे बच्चे जो पहली दूसरी में छोटा अ, बड़ा आ जानते हैं, जरूर सदस्य बनते हैं। क्यों? जब कि किताबें बहुत कम पढ़ पाते हैं? परन्तु उनके मां बाप जबरन सदस्य बनवाते हैं। इसका राज मुझे महीनों बाद मिला—गांव के कई घरों में चौथी पांचवीं तक पढ़ी बहुएं आ गई है, वह परम्परा के कारण हमारे पुस्तकालय स्थल पर नहीं आ सकती—तो ऐसे घरों में पुस्तकें बच्चों द्वारा मंगवाकर पढ़ी जाती हैं। वहीं बहुंए और मां-बाप पुस्तकें पढ़कर बच्चों को सुनाते हैं, जिसका लाभ स्वयं भी उठाते हैं।

ऐसा जानकर मुझे स्वयं उत्साह मिला। सदस्यों की संख्या उतार चढ़ाव पर रहती है। जैसे ही नई पुस्तकें आती है, सदस्य बढ़ जाते हैं। धीरे-धीरे कम, फिर ज्यादा चलता रहता हैं।

कुल मिलाकर गाँव में कुछ पढ़ते रहने की संस्कृति बन जैसी रही है। जानकारी लेने की जिज्ञासा नजर आती है। इसी आशा पर सचल पुस्तकालय चल रहा है।

शेष अनुभव दूसरे किश्त में—

कुत्ता जीभ से पानी क्यों पीता है? बैल, गाय, भैंस, घोड़ा आदि जीभ से पानी क्यों नहीं पीते ?

—मोहनदास बागरे
छिदगांव (तमोली)
पोस्ट पानतलाई

कोई जानवर पानी कैसे पीता है, यह बहुत कुछ उसके होठों की बनावट पर निर्भर करता है। यदि होंठ मोटे हों तो उनसे नली के समान आकार बनाकर पानी को ऊपर खींचा जा सकता है। कुत्ता या बिल्ली के होंठ इतने मोटे नहीं होते कि उनसे नली के समान रचना बनाई जा सके, इसीलिए वे पानी को अपनी जीभ से मुंह के अन्दर उछालते हैं। अब यह सवाल भी तुम्हारे दिमाग में उठ रहा होगा कि आखिर कुत्ता या बिल्ली के होंठ इतने पतले क्यों होते हैं। इस सवाल का उत्तर पाने के लिए हमें इन जानवरों के भोजन और भोजन लेने की विधि को देखना होगा।

कुत्ता, बिल्ली, शेर आदि मांसाहारी जन्तु हैं, ये दूसरे जन्तुओं का शिकार करते हैं। इसके लिए यह जरूरी है कि इनके तेज दांत मुंह से बाहर निकल सकें। यदि होंठ पतले हों तो दांत आसानी से बाहर निकल सकते हैं।

तुम्हारा यह सवाल बड़ा ही रोचक लगा। इसका जवाब खोजने में मुझे काफी समय लगा। यदि तुम्हें इसी तरह से जानवरों में या उनके क्रियाकलापों में अन्तर दिखे तो लिखना।

पैरों में झिनझिनी सी क्या चढ़ती है, तथा वह क्यों चढ़ती है ?

—श्याम सिंह पटेल
सुल्तान खां
मा. शाला, चांदोन

हमारे पैरों में जो झिनझिनी सी चढ़ती है उसका आभास तब होता है जब हम काफी देर तक एक ही स्थिति में बैठे रहते हैं। ऐसी स्थिति में शरीर के कुछ भागों में काफी लम्बे समय तक असामान्य दबाव पड़ता है, जिससे उन हिस्सों में रक्त का प्रवाह मंद पड़ जाता है। और फिर धीरे-धीरे उस हिस्से की संवेदना भी कम हो जाती है, साथ ही उस हिस्से की हिलने डुलने की क्षमता भी। यदि शरीर की स्थिति इस प्रकार बदले कि उस हिस्से पर पड़ने वाला दबाव कम हो जाए तो रक्त का प्रवाह धीरे-धीरे सामान्य (पहले जैसा) हो जायेगा। और उस हिस्से की संवेदना भी धीरे-धीरे सामान्य होने लगेगी। जब प्रवाह बढ़ता है तो संवेदना धीरे-धीरे लौटती है। इस का अहसास उस व्यक्ति को होता है और बिल्कुल कम संवेदना वाली स्थिति से सामान्य संवेदना की ओर बढ़ने में रक्त के प्रवाह का आभास झिनझिनी चढ़ने के रूप में होता है।

साइकल को चढ़ाई पर चलाते समय ताकत क्यों लगती है, मोटर-साइकल को चलाते समय ताकत क्यों नहीं लगती है ?

—सुरेश कुमार साहू
कालाआखर

किसी भी चीज को ऊपर ले जाने में जमीन पर चलाने की अपेक्षा अधिक ताकत लगती है। साइकल हो या मोटर साइकल या कोई पैदल ही ऊपर चढ़े तो भी समतल सतह पर चलने की अपेक्षा ऊपर चढ़ने में ज्यादा ताकत लगती है। फर्क सिर्फ इतना है कि साइकल चालक की ताकत से चलती और मोटर साइकल इंजन की। इसीलिए ऊपर चढ़ने में साइकल सवार या पैदल जल्दी थक जाते हैं। जब मोटर साइकल ऊपर चढ़ती है तो इंजन पर ज्यादा जोर पड़ता है। यानी इंजन को ज्यादा ताकत लगानी पड़ती है। यदि चढ़ाई अधिक हो तो गियर भी बदलना पड़ता है और मोटर-साइकल दूसरे गियर पर ही चढ़ पाती है।

साइकल के ट्यूब में गर्मी के दिनों में हमने कई बार देखा, ट्यूब में हवा ज्यादा हो जाती है। कई बार ट्यूब फट भी जाता है। ऐसा क्यों ?

—सुधा, माया, सुनीता,
पोखरनी शुक्ल, टिमरनी

यह तो हम जानते हैं कि गर्म करने पर सभी पदार्थ फैलते हैं। इसके लिए कई सरल प्रयोग किए जा सकते हैं। जिनसे ठोस पदार्थों, द्रवों व गैसों का फैलना देखा जा सकता है। कई साइकल चलाने वालों को पहियों में खूब हवा भरने की आदत होती है। जब तक ट्यूब इतनी न फुला दी जाए कि वह सख्त बन जाए। ऐसी परिस्थिति में तेज गर्मी में साइकल चलाने से टायर व ट्यूब न सिर्फ टायर के जमीन से रगड़ने से गर्म हो जाते हैं वरन् सूर्य का अधिक ताप भी उन्हें गर्म कर देता है। ट्यूब में भरी हवा इससे फैलती है और फैलने के कारण उसे ज्यादा जगह चाहिए। इससे ट्यूब की दीवार पर इस हवा का दबाव बढ़ जाता है और इससे हवा ज्यादा महसूस होती है। जब गर्मी बहुत अधिक हो और ट्यूब कुछ कमजोर हो तो ट्यूब फट जाती है।

आम, जाम, नीबू इन सबके पौधों पर मनुष्य की पेशाब पड़ने से वे सूख जाते हैं, पर बेशरम का पौधा क्यों नहीं सूखता ?

बकरी का पेशाब घास पर पड़ने से वह सूख क्यों जाता है ?

—सुदीप, कैलाश, मदनलाल,
टिमरनी

यह कहना सही नहीं लगता। प्राणियों के शरीर से जिन पदार्थों का निस्तार किया जाता है, उनमें सामान्य तौर पर ऐसे कार्बनिक पदार्थ होते हैं जो जैविक प्रक्रियाओं से बनते हैं। इनमें से कोई भी पदार्थ जहरीला नहीं होता। पेशाब भी ऐसे पदार्थों को शरीर से बाहर निकालने का एक माध्यम है। मनुष्य के शरीर से बाहर जाने वाली पेशाब में यूरिया की काफी अधिक मात्रा रहती हैं। तुम्हें पता होगा कि यूरिया पौधों के लिए खाद के काम आता है। इससे पौधे नाइट्रोजन प्राप्त करते हैं।

इसलिए ऐसा नहीं लगता कि मनुष्य की पेशाब से कोई पौधा सूख जाएगा। हां, यह जरूर है कि रासायनिक पदार्थों की अधिक मात्रा (खाद के रूप में) देने से वह जरूर सूख जाएंगे। ऐसा इसलिए हो सकता है क्योंकि उनके शरीर में उपस्थित द्रव्य कोशिकाओं से बाहर आ सकते हैं।

यह धारणा फैलने का एक कारण यह हो सकता है कि कुछ लोग ऐसा मानते हों कि पेशाब पड़ने से ये पेड़ अशुद्ध हो जाएंगे और उनमें लगने वाले फल खाने योग्य नहीं रहेंगे। इसलिए इन पौधों पर लोगों को पेशाब करने से रोका जाए। और लोगों को रोकने के लिए यह कहा जाता हो कि पेशाब करने से पेड़ ही सूख जाएगा।

दूसरा प्रश्न लगभग ऐसा ही है। एक बात सोचो, यदि बकरी की पेशाब से घास उगना बंद हो जाए, तो वह खाएगी क्या ? भूखी मर जाएगी ! यदि उसके निस्तार के पदार्थों से घास सूखती है तो उसका भोजन कम हो जाता है। कोई भी ऐसी प्रजाति जो अपने भोज्य पदार्थ के उगने में बाधक हो, धीरे-धीरे प्रकृति में भूखी मर जाएगी। इस लिए बकरी के पेशाब से घास के सूखने का कोई संबंध होगा ऐसा नहीं लगता।

विवाहित नारी या विधवा नारी की पहचान उसको देखकर की जा सकती है। पुरूष के लिए ऐसी क्या पहचान है ?

—शर्मिला, प्रमिला, चेतना, (किरन)
मा. शाला, पोखरनी, टिमरनी

तुम लोगों का यह सवाल मुझे बहुत पसंद आया। क्योंकि मेरे मन में भी यही सवाल बहुत दिनों से उठ रहा है। शादी-शुदा तथा विधवा स्त्री को उनके पहने कपड़े, सिन्दूर, आभूषण आदि से तुरन्त पहचाना जा सकता है। जबकि मर्दों के लिए ऐसी कोई पहचान नहीं है। वैसे विदेशों में विभिन्न अवस्था की स्त्रियों की पहचान के लिए अलग-अलग आभूषण तो नहीं हैं मगर उनमें भी उनके नाम के आगे "मिस" (कुमारी) या "मिसेस" (श्रीमति) लगता है। अत: औरतों के नाम से उनकी वैवाहिक स्थिति का पता चल सकता। मगर वहां के मर्दों के नाम के आगे केवल मिस्टर (श्री) की उपाधि लगती है चाहे वह विवाहित हो या अविवाहित या विधुर हो।

ऐसा क्यों ? क्या समाज में केवल स्त्रियों की वैवाहिक अवस्था का पता चलना आवश्यक है और मर्दों का नहीं ? इसका क्या कारण है। यह वास्तव में मेरी भी समझ में नहीं आता। तुम लोगों को इसके बारे में क्या लगता है ? मुझे लगता है कि ये सब शायद इसलिए है कि हमारे समाज में पुरुषों का ही नियंत्रण है। जायदाद उनके नाम में है, बाहर जाकर काम करना उनका हक है, समाज में हर विशिष्ट काम पर उनका नियंत्रण है, शिक्षा में भी उनका नियंत्रण है।

हिन्दू धर्म में माना गया है कि हर महिला को शादी से पहले अपने पिता के अधीन रहना चाहिए, शादी के बाद अपने पति के अधीन और पति के निधन के बाद बेटे के अधीन रहना चाहिए। अत: हर महिला को किसी किसी पुरूष के अधीन रहना ही चाहिये। ऐसी व्यवस्था में स्त्री को केवल एक आज्ञाकारी नौकर, नौकरानी और भोग की वस्तु का स्थान दिया जाता है। उसका अपना कोई व्यक्तित्व नहीं है। उसका परिचय उसके रक्षक-मालिक पुरूष से किया जाता है। इसीलिए कुंवारी, विवाहित व विधवा स्त्री की अलग-अलग पहचान है। जबकि मर्दों पर इस तरह का कोई प्रतिबन्ध नहीं है। जब शादी होती है तो पत्नी को पति के घर आना पड़ता है। अपने घर में जैसे भी रहती हो, पति के घर आकर उसी घर की रीत के अनुसार उठना-बैठना खाना-पीना व सोना-जागना पड़ता है। मानो शादी होने के बाद उसमें अपना सब कुछ बदलने की शक्ति आ गई हो। क्या तुमने ऐसा भी सुना है कि पति पत्नी के घर जाकर रहे और उस घर के सभी नियमों का पालन करे। और उसके अनुसार अपने को ढाले ? इसका मतलब यह है कि औरत का व्यक्तित्व और परिचय उसकी शादी होने के बाद बदल जाता है। शायद इसलिए उसकी वेष-भूषा भी बदल जाती है, ताकि वह अपनी बीती हुई जिन्दगी को बिल्कुल भूल जाये।

मगर हर समाज में ऐसा नहीं होता है। आज भी असम के "खासि" लोगों में स्त्री प्रधान व्यवस्था है। वहां शादी होने पर स्त्री-अपने मां के घर ही रहती है और पुरूष कुछ दिन के लिए घर आता है और बाद में अपनी मां के घर लौट जाता है। बच्चे माँ के नाम से जाने जाते है और उसी के नियंत्रण में रहते हैं। जायदाद भी लड़कियों को ही दी जाती है। प्राचीन इतिहास में भी कई ऐसे उदाहरण हैं जब एक समाज पहले स्त्री-प्रधान था, फिर धीरे-धीरे बदल कर पुरूष-प्रधान हो गया। ऐसा किन कारणों से हुआ होगा ? क्या तुम्हें कुछ सूझता है ? मैं भी सोच कर फिर कभी इसका उत्तर देने की कोशिश करूंगा।

★ ★

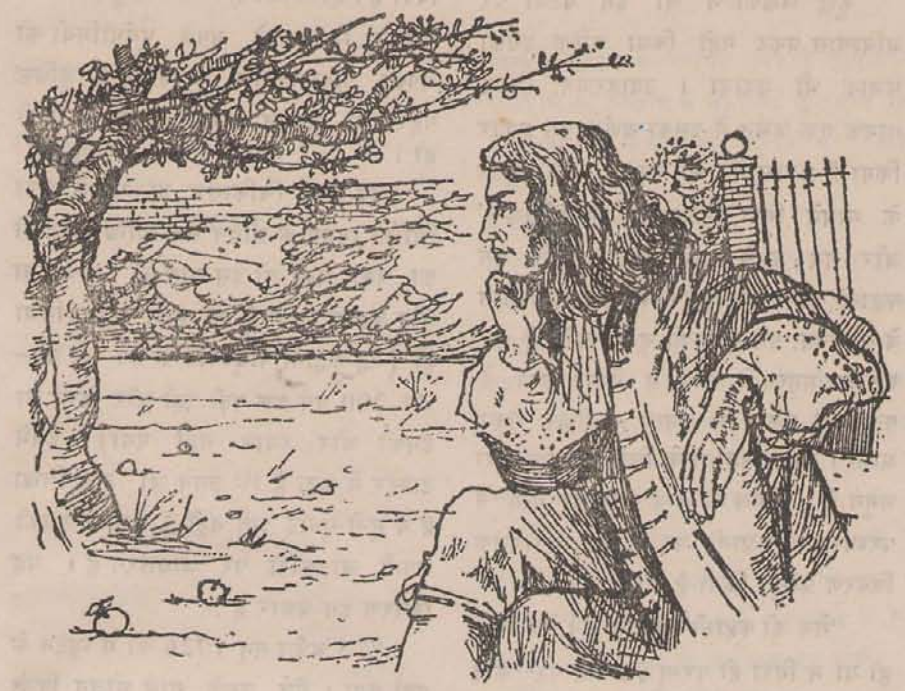

न्यूटन और सेव

सन् 1664 में जब आइजक न्यूटन बीस-बाइस वर्ष का हो चुका था तो वह ट्रिनिटी कालेज केम्बिज का सदस्य था। वहां वह गणित का अध्ययन कर रहा था। उस वर्ष सैकड़ों लन्दन वासी प्लेग से मर रहे थे। बाद में, विशेषकर सन् 1665 के ग्रीष्म काल में, यह भयंकर बीमारी देश के अन्य भागों में भी फैल गई।

यह अत्यन्त संक्रामक रोग है। इस कारण बहुत से लोगों ने नगर से बाहर छोटे-छोटे ग्रामों में यह सोचकर शरण ली कि घने बसे नगरों की अपेक्षा वहां रोग का संक्रमण कम होगा। न्यूटन शायद ही कोई ऐसी जगह ढूंढ़ सकता था जहां खतरा उसकी मां के घर की अपेक्षा कम हो। उसकी मां बुलसथोर्प नामक छोटे ग्राम में रहती थी जो लिंकनशायर में स्थित ग्रेन्थम से छः मील दूर था। अतः वह केम्ब्रिज से चला गया और लगभग अगले दो वर्ष उसने अपनी मां के साथ व्यतीत किये।

उसकी मां के घर में एक सुन्दर बगीचा था जहां न्यूटन घण्टों अध्ययन किया करता था। जीवन के बाद के वर्षों में उसने लिखा है कि उसने प्लेग के उन दो वर्षों में अपने शेष जीवन की अपेक्षा गणित और विज्ञान के ही बारे में अधिक विचार किया; उस समय जैसा कि उसने कहा कि "वह आविष्कार की दृष्टि से उसके जीवन का सर्वश्रेष्ठ काल था।" इन्हीं दिनों उसने गणित की महत्वपूर्ण शाखा अवकल गणित तथा प्रकाश से सम्बद्ध बहुत से नए तथ्य और गुरुत्वीय बल सम्बन्धी कुछ नियमों की खोज की।

न्यूटन के बारे में सबसे महत्वपूर्ण कहानी ऊपर उल्लेखित अन्तिम विषय से सम्बन्धित है। यह इस प्रकार है :

"एक दिन जब न्यूटन बुलसथोर्प नामक ग्राम में अपनी मां के बगीचे में बैठा हुआ था तो उसने पेड़ से एक सेब को गिरते हुए देखा। तब उसने इस तर्क पर विचार किया कि सेब सीधा भूमि पर ही क्यों गिरा? उदाहरण के लिये, ठीक नीचे गिरने के बजाय यह ऊपर या दाएं, बाएं क्यों नहीं चला गया? उसने निष्कर्ष निकाला कि डंडी से टूटने पर सेब के ठीक नीचे गिरने का कारण यह है कि कोई बल उसको भूमि की ओर खींच रहा है।"

इस प्रकार जैसा कि कहानी से निष्कर्ष निकलता है इस संयोगवश प्रेक्षण से प्रेरित होकर उसने 'गुरुत्वीय बल का आविष्कार किया।'

सम्भवतः इस घटना का प्रथम उल्लेख रोबर्ट ग्रीन ने बलों से सम्बद्ध सन् 1727 में प्रकाशित अपनी पुस्तक में एक संक्षिप्त वक्तव्य के रूप में किया है। इस पुस्तक में उसने न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण विचार का उल्लेख किया है और टिप्पणी करते हुए लिखा है : 'इस सुप्रसिद्ध विचार के लिए किसी स्रोत की आवश्यकता थी और कहा जाता है कि यह स्रोत सेब था। यह विचार मुझे मार्टिन फोक्स नाइट नामक एक प्रतिभाशाली भद्र व्यक्ति से प्राप्त हुआ जो मेरा अत्यन्त प्रिय मित्र था और वह 'फेलो आफ द रायल सोसायटी' भी था तथा जिसका उल्लेख मैंने उसे सम्मान देने के लिये किया है।"

कुछ वर्ष बाद, इस घटना का उल्लेख वोल्टेयर नामक एक फ्रांसीसी ने भी अपनी रचना 'लैटर्स कनसरनिंग दि इंगलिश नेशन' (1733) में निम्नलिखित शब्दों में किया है :

"सन् 1666 में प्लेग के कारण न्यूटन कैम्ब्रिज के समीपवर्ती किसी एकान्त स्थान पर चला गया था। एक दिन जब वह अपने बगीचे में टहल रहा था उसने किसी फल को पेड़ से गिरते हुए देखा। तब वह उस गुरुत्व पर मनन करने लगा जिसके बारे में सभी दार्शनिक बहुत दिनों से सोचते चले आये थे और हल नहीं निकाल पाये थे। यद्यपि सामान्य लोग सोचते थे कि गुरुत्व के बारे में ऐसा कुछ भी रहस्यमय नहीं हैं।"

कुछ वर्ष बाद वोल्टेयर ने स्वीकार किया कि न्यूटन की एक सौतेली भतीजी श्रीमती कॉनड्यूट ने उससे इस घटना के बारे में कहा था और यह भी सम्भव है कि उसी ने इसके बारे में मार्टिन फोक्स से भी कहा हो।

अगली शताब्दी में बहुत से दार्शनिकों ने इस बात को मानने से इन्कार कर दिया कि सेव के गिरने जैसी सरल घटना का गुरुत्वाकर्षण पर किए गए महत्वपूर्ण कार्य से कोई सम्बन्ध हो सकता है। यह देखा गया है कि उसके समकालीन बहुत से लेखकों ने इस घटना का कोई उल्लेख नहीं किया और यदि उन्होंने इसके बारे में सुना होता तो निश्चय ही उल्लेख किया होता। उदाहरणार्थ, फाउटेनैली, जिसने न्यूटन की मृत्यु के बारे में पुस्तक लिखी है, उसने भी इस घटना का उल्लेख नहीं किया है, यद्यपि उसने अधिकांश जानकारी श्रीमती कॉनड्यूट से प्राप्त की थी। एक अन्य समकालीन लेखक पेम्बरटन ने केवल इतना ही लिखा है, 'पहले पहल न्यूटन के मस्तिष्क में ये विचार, जो प्रिंसिपिआ के रूप में प्रस्फुटित हुए, तभी उदय हो चुके थे जब वह सन् 1666 में प्लेग के कारण कैम्ब्रिज छोड़कर चला गया था। जैसे ही वह बगीचे में बैठा, वह गुरुत्वीय शक्ति के बारे में सोचने लगा।' न्यूटन के अन्य समकालीन व्यक्ति विस्टन ने भी न्यूटन पर लिखी गई अपनी पुस्तक में यह उल्लेख नहीं किया है और न ही न्यूटन के मुख्य जीवनी लेखक सर डेविड ब्रिउस्टर ने ऐसा किया।

कुछ लेखकों ने तो इस घटना पर अविश्वास प्रकट नहीं किया बल्कि इसका मजाक भी उड़ाया। उदाहरणत: हीगल नामक एक जर्मन ने इसका वर्णन इस प्रकार किया है : 'उस सेव की कहानी, जो न्यूटन के सामने गिरा, बिलकुल कपोलकल्पित है' और तब उसने आगे लिखा है कि 'इस कहानी को पढ़कर जिन लोगों को मजा आया वे सम्भवत: इस बात को भूल जाते हैं कि वह सेव मनुष्य के पतन से लेकर ट्राय के पतन तक संसार में तमाम मुसीबतें लेकर आया। दर्शन-विज्ञानों के लिये सेव एक बुरा शगुन है।' हीगल के अन्य देशवासी गौस ने परम्परागत कहानी का निम्न मनोरंजक विवरण प्रस्तुत किया है :

"सेव की कहानी बकवास है। सेव गिरा हो या न गिरा हो परन्तु इस बात पर कोई कैसे विश्वास कर सकता है कि ऐसी खोज इस प्रकार से त्वरित या अवमंदित की जा सकती है। निश्चय ही कुछ कुछ इस प्रकार की घटना घटित हुई होगी। किसी मूर्ख और हठी व्यक्ति ने न्यूटन के पीछे पड़कर यह पूछा होगा कि उसे इस महान् खोज का विचार कैसे सूझा। जब न्यूटन को यह महसूस हुआ हो कि उसका किसी उल्टी खोपड़ी से पाला पड़ गया तो उससे छुटकारा पाने के लिये उसने कह दिया हो कि एक सेव उसकी नाक पर गिर पड़ा था। इस बात से उस आदमी को सारी घटना समझ में आ गई हो और वह संतुष्ट होकर चला गया हो।"

कहानी का यह भाग, जिसमें कहा गया है कि गिरते हुए सेव को देखकर न्यूटन को गुरुत्वबल की खोज करने की प्रेरणा मिली, आसानी से रद्द किया जा सकता है क्योंकि उससे पहले भी बहुत से व्यक्ति इस बल के बारे में थोड़ा बहुत जानते थे। उदाहरणार्थ गैलीलियो ने, जिसकी मत्यु उसी वर्ष हुई थी जिस वर्ष न्यूटन का जन्म हुआ था, मनुष्य के गुरुत्व सम्बन्धी ज्ञान में पर्याप्त योगदान दिया है। हो सकता है कि गिरते हुए सेब को देखकर न्यूटन को, अपने पूर्वगामियों की अपेक्षा, गुरुत्वाकर्षण के बारे में अधिक गहराई से अध्ययन करने की प्रेरणा मिली हो।

जब उसके चिकित्सक, डॉ. स्टूकले द्वारा लिखित न्यूटन के जीवन से सम्बन्धित कहानी का पता चला तो इस बात की सम्भावना और दृढ़ हो जाती है कि न्यूटन ने ऐसा किया हो (यह कहानी पांडुलिपि के रूप में लगभग 200 वर्ष तक पड़ी रही और किसी का इसकी ओर ध्यान नहीं गया)। इसमें डाक्टर ने कहा है कि उसने जो कुछ लिखा है वे सुनी-सुनाई बातें नहीं हैं वरन् उसकी अपनी जानकारी पर आधारित हैं। यह विवरण इस प्रकार है :

"15 अप्रैल सन् 1726 को मैं न्यूटन के यहां गया। मैंने उसके साथ भोजन किया और सारा दिन अकेले उसके साथ व्यतीत किया। उस दिन मौसम गर्म था अत: रात का भोजन करने के बाद हम बाग में चले गए और सेव के पेड़ों के नीचे हमने चाय पी। उस समय केवल हम दोनों ही थे। अन्य खोजों के साथ-साथ उसने कहा कि जब उसके मन में पहले पहल गुरुत्वाकर्षण का विचार आया तब भी वह इसी प्रकार बैठा हुआ था। उसी समय जब वह विचारमग्न मुद्रा में बैठा था कि एक सेव ऊपर से आकर गिरा। उसने स्वयं से प्रश्न किया कि सेव सदैव लम्बत: भूमि पर क्यों गिरता है? यह इधर-उधर या ऊपर न जाकर लगातार भूमि के केन्द्र की ओर क्यों आता है? निश्चय ही इसका कारण यह है कि भूमि इसे खींचती है।"

इस प्रकार के प्रमाणों की उपेक्षा नहीं की जा सकती और ऐसा लगता है कि भूमि पर गिरते हुए सेव ने न्यूटन को गुरुत्व के बारे में सोचने पर प्रेरित किया।

['विज्ञान की कहानियां' से साभार]

विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम अनुवर्तन

अनुवर्तक की डायरी के यह हिस्से पढ़कर लगता है कि अनुवर्तन एक हौआ है। इसे करने वाला अनुवर्तक शायद कयामत की शक्ल में स्कूल में हाजिर होता है। जिसके पहुँचते ही स्कूल में एक हड़बड़ी सी फैल जाती है। हालांकि यह भी सच है कि सभी जगह बल्कि अधिकतर ऐसा नहीं होता।

आखिर अनुवर्तन है क्या बला ? और मुसीबतों की जड़ यह अनुवर्तनकर्ता भला स्कूलों में जाता किस लिए है ? क्या करता है वहाँ जाकर ? और उसे करना क्या चाहिए ? इन सभी मुद्दों पर हम शिक्षकों, अनुवर्तनकर्ताओं और अन्य साथियों की राय जानना चाहते हैं ताकि अनुवर्तन और अनुवर्तनकर्ता की जो तस्वीर लोगों के दिलो-दिमाग में है, उसे पेश कर सकें।

1– मैं जैसे ही अनुवर्तन के लिए शाला के गेट पहुंचकर सायकल से उतरा वैसे ही कक्षा से बालकों का एक बड़ा समूह बेतहाशा दौड़कर दूसरी ओर भागा। बरामदे में लगी कक्षा के सर, एक पड़ोस की कक्षा के सर भी चकराये। इन कक्षाओं के बालक भी भौंचक्के से देख रहे थे। "कुछ हो गया" की आशंका लिये बरामदे वाले गुरुजी बालकों के पीछे तेजी से दौड़े। उनके क्या हुआ ? प्रश्न का उत्तर न देकर बालक दौड़े चले जा रहे थे। हल्ला सुन प्रधान अध्यापक व अन्य अध्यापक भी मैदान में आ खड़े हुए, सब विस्मय से एक दूसरे का मुंह ताक रहे थे, किसी के पास कोई उत्तर नहीं था। मैं सायकल दीवार से टिका कर मैदान में खड़ी उस अजीबो–गरीब भीड़ का सदस्य बन गया। बरामदे वाले सर एक छात्र को पकड़ लाये। हांपते हुए बच्चे मैदान में लाकर, प्रधानाध्यापक के सामने खड़ा कर दिया। बालक बहुत घबराया हुआ था। और बार-बार मेरी ओर देख रहा था। उस पर प्रश्नों की बौछार हो रही थी–"क्यों भाग रहे थे" ? "क्या हुआ" ? तुम्हारे साथी भागकर कहाँ गये हैं ? बालक चुप। प्रधानाध्यापक की डांट पर सहम कर बालक बोल पड़ा–"कुछ नहीं हुआ, हमारे सर ने इन सर [मेरी ओर इशारा कर] को आते खिड़की से देख लिया था सो जल्दी से भागकर कुछ पौधे ले आने को कहा"।

2– मैं अनुवर्तन को पहुंचा। शाला ठीक चल रही थी। प्रसन्नता हुई। एक कक्षा बरामदे में लगी थी। सर पढ़ाने में तल्लीन थे। मैं बिना उन्हें डिस्टर्ब किये प्रधान अध्यापक कक्ष में पहुंच गया। विज्ञान कक्षा के कमरे की जानकारी मैंने चाही। प्रधानाध्यापक मेरे साथ हो गये और न चाहने पर भी मुझे कक्ष के द्वार तक छोड़ गये। कक्षा का द्वार बरामदे के दूसरी ओर था। जैसे ही मैं पहुंचा, सर जो एक हत्थेदार कुर्सी पर आलकी पालकी मारकर बैठे थे, उठने का प्रयत्न करने लगे। कुछ तो हड़बड़ाहट, कुछ सर का स्वस्थ शरीर और फिर हत्थेदार कुर्सी में पदमासन मुद्रा, उठ नही पाये। अस्तु, कुछ मिनटों में कुर्सी से पृथक हो उन्होंने जोर-जोर से फरमान जारी किये, "जा रे बीकर ले कर आ। "ऐ जा तू, जल्दी से माइक्रोस्कोप ले आ, देख गिराना मत", "जा तू ब्लेड के टुकड़े ले आ।" सालों को पौधे लाने का कहा था, क्यों वे, क्यों नहीं लाये ?

3– शाला प्रारम्भ होने के पूर्व ही मैं उपस्थित हो गया था। पहला पीरियड छठवीं कक्षा में विज्ञान का था। सर से मैंने कहा कि आप शुरू करें मैं अभी आता हूं। क्योंकि हाजरी लेना होगी। पांच सात मिनट बाद मैं कक्षा में पहुंचा। देखा तो सर एक रस्सी को बच्चों की मदद से सुलझा रहे थे। रस्सी ठीक कर उन्होंने बोर्ड के सामने खिड़कियों से बांध दिया। रस्सी में एक चिमनी, एक परखनली एक फनल, हेन्डलेंस, टेस्टटयूब होल्डर, अखबार का टुकड़ा आदि कई वस्तुएं लटकी थीं। सर ने आदेश दिया–समूह बनाओ। बालक समूह लिखने लगे। कुछ समय बाद सर ने एक छात्र से पढ़ने को कहा। छात्र ने तपाक से उत्तर दिया—'गुण धर्म कांच की वस्तुएं, समूह के सदस्य-परखनली, चिमनी, हेंडलेंस। अब दूसरे छात्र से पूछा गया। उसने दूसरे समूह की जानकारी दूसरे गुण धम को लेकर सही सही बता दी। मैं चकित था। जिज्ञासावश मैंने उठकर पूछा–"किसी ने इसे (अखबार के टुकड़े को इशारा कर) लेकर समूह बनाया है ?"

तत्काल एक छात्र ने उत्तर दिया, "जी हां सर। लकड़ी से बनी वस्तुओं के समूह में।"

मैंने सर की ओर देखा। उन्होंने मुझे समझाया--कागज बांस से बनता है और बांस लकड़ी ही तो है।

मैं कक्षा से बाहर निकला। दो लड़के जो लेट आने के कारण दरवाजे पर खड़े थे, मैदान में चले गये। मैंने उन बच्चों से जाकर पूछा कि कितने पाठ पढ़ाये जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि बस सही एक पाठ हुआ है। जब भी बाहर से आपके जैसे कोई सर आते हैं, हमारे सर यह झालर टांग देते हैं और ये ही प्रश्न करते हैं।

मिस्टर डाक्टर

1878 में हेनरीक गोल्डस्मिथ का जन्म एक यहूदी परिवार में हुआ। उनके पिता जोजफ गोल्डस्मिथ पेशे से वकील थे, और दादा एक डाक्टर थे। बाल्यावस्था में ही हेनरीक के पिता का देहान्त हो गया। इससे बच्चों के लालन-पालन का सारा बोझ हेनरीक की मां पर आ पड़ा। हेनरीक का बचपन घोर गरीबी में बीता। कठिन परिश्रम से उन्हें मेडिकल कालेज में दाखिला मिला। कालेज का खर्च चलाने के लिये वह पार्ट टाइम ट्यूशन करते थे। हेनरीक ने बहुत करीबी से गरीबी और बच्चों की दयनीय स्थिति को देखा था। बच्चों क अंतरंग प्रेम के कारण ही हेनरीक ने डाक्टरी की पढ़ाई में 'बाल रोग' अपना विशेष विषय चुना।

एक पेशेवर डाक्टर की हैसियत से हेनरीक गोल्डस्मिथ को काफी सफलता और लोकप्रियता हासिल हुई। वह बच्चों के डाक्टर होने के साथ-साथ बच्चों के लिये कहानियां भी लिखा करते थे। गोल्डस्मिथ की मातृभूमि पोलेन्ड उस समय रूस की जारशाही के अधीन थी। प्रथम महायुद्ध के दौरान गोल्डस्मिथ को रूस के बहुत से दूर-दराज इलाके घूमने का मौका मिला। बाद में उच्च डाक्टरी शिक्षा के लिये वह जर्मनी, पेरिस और लन्दन में भी काफी समय रहे।

डाक्टरी के पेशे में काफी शोहरत कमा लेने के बाद भी गोल्डस्मिथ बेचैन रहते। एक डाक्टर की हैसियत में उनका रोज सैकड़ों गरीब मजदूरों के बच्चों से साक्षात्कार होता। गोल्डस्मिथ सोचते इन बीमारियों की जड़ क्या है? अंतत: उन्होंने अपना सारा समय गरीबी और बीमारियों के मूल कारणों को खोजने में लगा दिया। वह पहले से ही पोलेन्ड की राजधानी-वारसा के अनाथालयों से सम्बद्ध थे। उन्होंने अपने अध्ययन और अनुभवों से महसूस किया कि भूखे पेट गरीब बच्चों के रोगों का उपचार महज दवाइयों से सम्भव नहीं। इसके बाद गोल्डस्मिथ बच्चों की, 'आत्मा को संवारने' में जी जान से जुट गये।

इसी समय हेनरीक गोल्डस्मिथ ने 'जानूस कोरचाक' के छद्म नाम से लिखना प्रारम्भ किया। अतीत में वह इसी नाम से जाने गये। अनाथालय के बच्चे, प्यार से गोल्डस्मिथ को 'मिस्टर डाक्टर' के नाम से बुलाते।

जानूस कोरचाक के अनुसार 'बच्चे दुनिया के सबसे पुराने सर्वहारा हैं। गरीब, अनाथ और यहूदी बच्चों की हालत तो और भी दयनीय थी। अपने सपने को एक ठोस रूप देने के लिये कोरचाक ने 5 से 14 वर्ष की उम्र के अनाथ बच्चो के लिये एक आश्रम खोला। इस आश्रम का नाम था 'नाज डोम'–जिसका मतलब होता है 'हमारा घर'। कोरचाक की कलम बच्चों के उत्पीड़न को सदैव शब्द देती रही। उन्होंने कुछ अद्भुत पुस्तकें लिखीं जिनके नाम थे—'मैं जब छोटा होऊंगा', 'एक तितली की आत्मकथा', 'समाज के बालक'. और 'बच्चों को प्यार कैसे करें?' यह वृत्तांत, कहानियां और यादगारें महज लेख भर न थे, अपितु कोरचाक के जीवन के ठोस अनुभवों का एक आईना थे।

'नाज डोम' 200 अनाथ बच्चों का अपना घर था और कोरचाक उनके पिता थे। वह बच्चों से कहते कि शिक्षा और शोध की वास्तविकता को कभी नजरन्दाज नहीं करना चाहिये। 'बच्चों की जिन्दगी में खुद शरीक हो' इसी गुरुमंत्र की प्रेरणा के अनुसार 'नाज डोम' चलता था। कोरचाक ने बार-बार वयस्कों से अपील की 'तुम अपने आपको बच्चों के स्तर तक उठाओ'। कोरचाक के लिये जीवन जीना सदैव प्राथमिक रहा, लिखना द्वितीय रहा। वह कहते थे, 'एक दिन पूरी तरह जिन्दा रहना, एक समूची किताब लिखने से कहीं कठिन है।' अपने एक नाटक 'पागलों की जमात' में कोरचाक ने एक बालक मुख्यपात्र के जरिये वयस्कों को यह अंतिम संदेश भी दिया है। 'मेरा विश्वास है कि संसार के आत्मिक उत्थान में बच्चे एक अहम रोल अदा करेंगे'।

1933 की जर्मनी में हिटलर के सत्ता में आने के बाद सारे यूरोप में फासीवाद का काला साया मंडराने लगा। पोलेन्ड में यहूदियों के भय के कुछ खास कारण थे।

पोलेन्ड हिटलर के खूनी मनसूबों का पहला शिकार हुआ। हिटलर के कारिन्दे पोलेन्ड को एक मौत की कोठरी में बदल देना चाहते थे। यहूदियों को दिन दहाड़े उनके घरों में से खदेड़ दिया जाता था।

झुग्गी बस्तियों (Ghettos) में से यहूदियों को चुन-चुन कर पकड़ा जाता, और मौत के घाट उतारा जाता था । ऐसे माहौल में कोरचाक द्वारा अनाथालय चलाना एक बेहद दूभर और जटिल काम हो गया था । अक्सर कोरचाक अपने बच्चों के साथ भूखे सो जाते । कभी-कभी वह गली-गली कुछ बचे-खुचे खाने की भीख मांगते । सबसे बुरा समय अभी आने वाला था । कोरचाक को इसका संदेह पहले से ही था । उनके अंत:करण में इस बात का डर था कि कहीं फांसीवादी पोलेन्ड में यहूदी बच्चों का सफाया न कर दें । पर जिन्दगी से बेहद प्यार, और मानवता पर असीम विश्वास करने के कारण कोरचाक इस सम्भावना पर विश्वास नहीं करना चाहते थे । फिर भी, वह काला दिन आया ही ।

5 अगस्त 1942 के दिन सुबह-सुबह हिटलर के नाजी सिपाहियों ने कोरचाक के 'अपने घर' को घेर लिया । बच्चों ने अभी सुबह का नाश्ता खत्म भी न किया था कि उनको बाहर आँगन में खड़ा होने का हुक्म दिया गया । उस दिन बच्चे हिटलरशाही की 'हिट लिस्ट' में थे । बच्चे आंगन में पांच-पांच की कतारों में खड़े हो गये । बच्चों के साथ उनके शिक्षक और उनके सबसे अज़ीज 'मिस्टर डाक्टर' भी मौजूद थे । उनके हाथ में अनाथालय का हरा झण्डा भी था । वहाँ से बच्चों को एक एकान्त स्थान की ओर चलने का आर्डर मिला । जहां बच्चों को मौत के घाट उतारा जाने वाला था, उस स्थान का नाम था 'ट्रेबलेन्का ।'

सारे स्कूल के बच्चे सौम्य और शांति से आगे बढ़ रहे थे । पर इस शांति में एक गहरी उदासी भी थी । छोटे बच्चों को तो इस बात का अहसास भी न था कि वह मौत के मुंह में जा रहे हैं । पर किसी के चेहरे पर फिक्र का भाव न था, क्योंकि उनके साथ उनके जिगरी दोस्त 'मिस्टर डाक्टर' जो थे । कभी-कभी बच्चे एकाध गाना भी गा रहे थे । शहरवासी अपने घरों के दोनों ओर खड़े इस जत्थे को गाते, आगे बढ़ते देख रहे थे । नाजी सैनिकों की भारी लैस बन्दी को देखते हुए किसी के लिये भी कुछ करना असम्भव था ।

अन्त में बच्चे उस मुकाम पर पहुंचे जहां सैनिक ट्रक अपने दरवाजे खोले उनका इंतजार कर रहे थे । किसी कारणवश कोरचाक का नाम नाजियों की 'हिट लिस्ट' में न था । इसका एक कारण यह था: क्योंकि कोरचाक एक प्रतिष्ठित डाक्टर थे, शायद इसलिये उनको जर्मन नाज़ी किसी और काम में लगाना चाहते थे । यह भी सम्भव है कि कोरचाक की मौत का व्यापक असर होने की वजह से नाजी उन्हें अभी बख्शना चाहते थे । पर कोरचाक ने साफ शब्दों में हिटलर के सैनिकों की मदद से इन्कार कर दिया । बच्चों को मौत के घाट में जाते देख कोरचाक का दिल भर आया था । उन्होंने इन शब्दों में नाज़ी सैनिकों का तिरस्कार किया 'अगर मैं बच्चों के पास में रहकर, क्षण भर के लिये भी उनके दुख, उनकी त्रासदी में सहायक हो सकूं, तो मेरी सारी जिन्दगी उसके लिये कुरबान है ।'

इसके बाद स्कूल के 200 बच्चे, सारे शिक्षक और 'मिस्टर डाक्टर' ट्रक में भर कर एक दूर-दराज के इलाके में ले जाये गये और मौत के घाट उतार दिये गये । प्रतीक के रूप में उनके साथ उनके अनाथालय का हरा झण्डा भर था ।

विश्वास नहीं होता कि इस जमाने में ऐसी वहशी घटना सम्भव भी है । कोरचाक एक साधारण डाक्टर, शिक्षक, इंसान थे । पर कई मायनों में वे एक असाधारण डाक्टर, शिक्षक और इसान थे ।

चितरंजन दास

Parents & Pedagogues

से साभार

अगले अंक में.........भारतीय अंक पद्धति

दसवीं सदी की एक अरबी पुस्तक में गुबार (भारतीय) अंक

शक, पार्थव और कुषाणों के अभिलेखों से							अशोक के अभिलेखों से	
ʔI	100	33	40	IIX	6	I	I	1
ʔII	200	733	50	IIIX	7	II	II	2
ʔIII	300	333	60	XX	8	III		
II3ʔI	122	ɔ333	70	7	10	X	IIII	4
X13733ʔII	274	3333	80	3	20	IX	IIIII	5

खरोष्ठी अंक-संकेत

अथ छुट्टी महात्म्य

वैसे तो अलग-अलग जातियों, समुदायों एवं क्षेत्रों के अपने पर्व होते हैं। हम यहां ऐसे वर्ष की कथा सुना रहे हैं जो जातियों, समुदायों, ओर क्षेत्रों की सीमाओं से ऊपर उठकर राष्ट्रीय पर्व होने का असली दावेदार है। यह महान पर्व है "छुट्टी"। शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान, तकनालाजी, खेती, आम आदमी का रहन सहन, खेलकूद एवं और भी दूसरे क्षेत्रों में हम दुनिया में भले ही फिस्डी हों परंतु जहां तक छुट्टियों का मामला है हम बिना शक अव्वल ही होंगे।

किस्सा भले ही किसी पुराण का न हो, पर है सच्चाई के एकदम नजदीक। एक बार एक भक्त की भक्ति से भगवान खुश हो गए। तो फिर नियम के मुताबिक भगवान ने कहा जो चाहो वरदान मांग लो। भक्त, तो तलाश में था ही इसी मौके की। उसने फटाफट दो वरदान मांगे। पहला तो भगवान मुझे अगले जन्म में पुण्य पावन और पुनीत भारत भूमि पर ही जन्म देना, और दूसरा किसी शासकीय मदरसे में शिक्षक बना देना। भगवान ने वरदान देने के बाद कहा, भक्त लगता है तुम्हें भारत भूमि और शिक्षा से बहुत प्रेम है। तुम धन्य हो। तुम्हारा कल्याण हो—भक्त ने सोचा दाई से क्या पेट छिपाना, अत: उसने कहा आप तो अन्तर्यामी हैं भगवन। वैसे तो यह जमाना सीधी सच्ची बात करने का नहीं हैं। परन्तु यदि आप वायदा करें कि दिया हुआ वरदान वापस नहीं लेंगे तो सच्ची बात आपको बता सकता हूं। भगवन के कान भी मुद्दत से सच्ची बात सुनने को तरस रहे थे। और रंग जमाने का भी अच्छा मौका था। अब वे फटकारते हुए बोले, रे मूढ़ क्या तूने यह नहीं सुना "प्राण जाहिं पर वचन न जाहिं" फिर तुझे शंका कैसे हुई? भक्त ने कहा, भगवन पहले तो नेता भी जो कहते, वही करते थे। आज तो प्रभु आप खुद ही देख रहे हैं कि नेता जो कहते हैं, उसे छोड़ बाकी सब करते हैं। अब आप भरोसा दिला रहे हैं तो हम भी रिस्क ले लेते हैं। आप भी क्या याद करोगे, कभी सच्चे इंसान से पाला पड़ा था। हां तो सौ टके की बात तो यह है कि न तो मुझे भारत भूमि से कोई प्रेम है और न ही शिक्षा विक्षा से। दरअसल बात यह है कि भारत में छुट्टियां बहुत होती हैं और फिर वहां के स्कूल और कालेज तो शायद बने ही छुट्टियों के लिए हैं। लोग बाग ऐसा कहते हैं कि जिस तरह मछली बिना पानी के नहीं रह सकती उसी तरह स्कूल और कालेज भी बिना छुट्टी के नहीं रह सकते। यह सुनकर भगवान ने कहा वत्स छुट्टियों की कथा हमें विस्तार से सुनाओ। भक्त ने बताया प्रभु जैसे आपके अनेकों रुप हैं इसी तरह छुट्टी भी नाना भांति के रूप धारण कर स्कूलों में प्रवेश करती है। जैसे हमारे पहले मालिक हर इतवार की छुट्टी दे गए। भारत में पाई जाने वाली अनेकों जातियों और सम्प्रदायों के मामूली से मामूली त्यौहारों की छुट्टियां, कभी कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति मर जाते हैं तो छुट्टी। हां, इस मामले में हमारे स्कूल समदर्शी हैं वे ऊंच नीच, बड़े छोटे प्रमुख और गैर मामूली लोगों और अपने-पराये में भेद नहीं करते। नगर में किसी के मरने का अंदेशा भर हो, छुट्टी कर देते हैं। सभी स्कूलों में शिक्षकों की पहली ड्यूटी होती है कि वे पता करते रहें कि कब कौन मरा। अब तक नगर में कोई नहीं मरता, स्कल में मासूमी छाई रहती। एकदिन की बात है, हमारे पड़ौसी पाण्डेजी, पप्पू के गुरुजी से शिकायत कर रहे थे, कि आजकल के लड़के बहुत झूठे हैं। वे कह रहे थे कि पिछले सप्ताह हर रोज स्कूल से भाग आता था और कहता, छुट्टी हो गई ? अब आप ही बताइये गुरुजी, यह स्कूल है कि तमाशा ? रोज-रोज छुट्टी ? गुरुजी ने समझाते हुए कहा कि नहीं साहब स्कूल, स्कूल है, तमाशा कैसे हो सकता है ? यदि तमाशे वाले रोज रोज छुट्टी करेंगे तो ससुरे खायेंगे क्या ? यह तो स्कूल ही है जहां रोज-रोज छुट्टी के बाद भी पहली तारीख को पूरी तनखा बिना नागा बैंक में पहुँच जाती है। पाण्डे जी ने भुनभुनाते हुए कहा कि नेताओं की तरह बे सिर पैर की मत हांको। आप हमें यह बताओ कि पिछले हफ्ते रोज-रोज छुट्टी कैसे होती रही। गुरु जी ने बताया कि इतवार की तो छुट्टी होती है। सोमवार को हमारे पास वाले स्कूल की बहन जी की ननद की बुआ के लड़के के साले की मौत हो गई थी। पाण्डे जी ने पूछा कि बहिन जी की बुआ की ननद के लड़के के साले की मौत हो गई तो क्या हुआ ? गुरू जी अब तक मोर्चा सम्हाल चुके थे। जोर से बोले, कैसा स्वार्थी और निर्मोही जमाना है ? पूछते हैं मर गया तो क्या हुआ ? अरे जमाने को दुख भले ही न हो. हमारा स्कूल बगैर दुख मनाए कैसे रह सकता है ? एक यही तो काम है जिसे हम बिना चूके और बिना भेदभाव के करते हैं। जिस किसी के भी मरने पर स्कूल बंद किया जा सकता है, उसकी मौत पर हमें दुख होगा, समझे ? पाण्डे जी भौंचक्के से रह गए और लाख समझाने पर भी छुट्टी की घुट्टी उनके गले

नहीं उतर पाई। पाण्डे जी ने सोचा अभी तो पांच दिनों का हिसाब बाकी है अतः एक दिन के मामले में उलझना ठीक नहीं। हां तो सोमवार फतह कर दुगने उत्साह से गुरूजी बोले, मंगलवार को खबर आई कि बुधवार को हमारे लोकप्रिय विधायक आ रहे हैं। तिवारी जी ने कड़क कर कहा, मैं विधायक की बात नहीं कर रहा, यह बताओ स्कूल क्यों नहीं लगा। गुरू जी ने कहा अरे भाई हमारे होनहार लाड़ले विधायक जी अपार कष्ट झेल कर साल छः माह में एकाध दिन के लिये नगर में आ पाते हैं। अब भला तुम्हीं बताओ हमारा स्कूल उनका अभिनन्दन न करे ? आप रहते किस दुनिया में हैं जनाब ? मालूम भी है, कई स्कूलों के लोग तो राजधानी में हफ्तों डेरा डाले रहे, उनको विधायक जी ने समय ही नहीं दिया। वो तो हमारे बड़े गुरू जी का ही दबदबा है कि विधायक जी हमारे स्कूल में आ गये। तो बस मंगलवार को अभिनन्दन समारोह की तैयारी, बुधवार को शानदार समारोह। अब तुम्हें क्या बताएं तुम तो सठिया गए हो। एक बात बताओ, यदि हम अभिनन्दन नहीं करेंगे तो ट्रांसफर क्या तुम्हारे बाप रूकवायेंगे ? पूछो और क्या पूछना है ? पाण्डेजी ने डरते हुए कहा, आप तो नाहक लाल पीले हो रहे हो, हमने विधायक जी के बारे में थोड़े ही कुछ कहा है। अच्छा गुरूजी अब चलते हैं। गुरुजी ने कहा अभी कैसे चलते हैं अभी तो गुरूवार, शुक्रवार और शनि बाकी हैं। हां तो गुरूवार को सभी शिक्षक पशुगणना के राष्ट्रीय महत्व के काम पर गए थे, शुक्रवार को थानेदार सा. के लड़के की सगाई थी, हम सब मास्टरों की ड्यूटी वहां लगी थी। तुम्हें तो मालूम है, हमारे साहब कितने केसों में फंस चुके हैं, परन्तु इन्हीं थानेदार साहब की मेहरबानी से अलगंट बच गये और मूछों पर ताव देते फिर किसी नये केस की तलाश में फिर रहे हैं। क्या हम इतने गए बीते हैं कि अपने साहब पर की गई मेहरबानियों को भूल जाते। और सब कुछ हो सकता है पर हम नैतिकता से नहीं गिर सकते। विधायक और थानेदार का किस्सा ही पाण्डे जी की धोती ढीली करने को काफी थे। उन्होंने कहा, गुरू जी माफ करना मैं तो मन्दिर जा रहा था, भैया मुझे क्या करना है, तुम जानो और तुम्हारा स्कूल। मुंह से कुछ गलत निकल गया हो तो माफ कर देना। गुरू जी ने मन ही मन कहा अरे घनचक्कर जब तुम्हें ही अपने बच्चों के भविष्य की फिकर नहीं है तो क्या हमें पागल कुत्ते ने काटा है कि हम रोज रोज स्कूल लगायें।

—श्याम बोहरे

नोट :—थानेदार और विधायक का किस्सा आते ही भगवान की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई और वे तो संवाद अधूरा ही सुनकर मैदान छोड़ भागे थे।

अगले अंक में :

नई शिक्षा नीति

गिजुभाई

सवालीराम क्लब

और................

स्थाई स्तम्भ

पढ़िए

बच्चों के लिए :

चकमक

मूल्य (एक प्रति) : 2-50 रुपए वार्षिक चंदा : 30 रुपए

शिक्षकों के लिए :

होशंगाबाद विज्ञान

मूल्य (एक प्रति) : 1 रुपया वार्षिक चंदा : 12 रुपए

जनविज्ञान का सवाल :

भोपाल गैस त्रासदी

मूल्य (एक प्रति) : 3 रुपए

और . . . .

इतिहास क्या है? : मूल्य : 0.75 पैसे

विज्ञान क्या है? : मूल्य : 0.50 पैसे

होशंगाबाद विज्ञान के लिए :
एकलव्य हरदा केन्द्र
नेहरू कालोनी
हरदा (म. प्र.)

सम्पर्क पता :
एकलव्य
ई 1/208 अरेरा कालोनी
भोपाल (म. प्र.) 462016